—: चतुर्थ परिच्छेद :—

Chapter-4

—: चतुर्थ परिच्छेद :— Chapter-4

बौरीगढ़ का संग्राम ‡चन्द्रावलि की चौथी‡ :-

परमाल रासो की वर्णनाओं में ग्यारहवाँ युद्ध बौरीगढ़ की लड़ाई के रूप में प्रसिद्ध है । इस युद्ध में चन्द्रावलि की चौथी की कथा है । राजकुमारी चन्द्रावलि चन्देल-नरेश परमर्दिदेव की इकलौती पुत्री थी, जो अत्यधिक रूपवती एवं गुणवती थी । जब वह विवाह योग्य हो गई, तो उसके सौन्दर्य की प्रशंसा चारों ओर फैलने लगी । अनेक राजघराने उसे अपनी पुत्र-वधू बनाने की चेष्टा करने लगे ।

बौरीगढ़-नरेश वीरशाह चन्द्रावलि के गुणों की प्रशंसा सुनकर परमर्दिदेव के पास विवाह-प्रस्ताव भेजता है । वह यदु-वंशी था । वह विवाह प्रस्ताव का उत्तर न पाकर महोबा पर चढ़ाई कर देता है । महोबा की घेरा-बन्दी हो जाती है, तब सन्देशवाहक वीरशाह का संदेश लेकर परमाल के दरबार में जाता है । राजा परमाल अपनी पटरानी से इस विषय में विचार-विमर्श करते हैं । रानी ‡मल्हना‡ उन्हें समझाती है कि अपनी बेटी अब विवाह-योग्य हो गई है । विवाह तो करना ही होगा । राजा वीरशाह यादव-वंशी अच्छे कुल के हैं । उनका पुत्र इन्द्रसेन भी सुन्दर एवं गुणी है । अतः हमें रिश्ता स्वीकार कर लेना चाहिए ।

अपनी पत्नी की बात स्वीकारते हुए, राजा चन्देल, वीरशाह को पत्र लिखते है । पत्र में अपनी शक्ति का परिचय देते हुए वे लिखते हैं कि—

नाम हमारो तुम जानत हो, जग में विदित रजा परमाल ।
बड़े-बड़े क्षत्री हम जीते हैं, सब की हार गई तलवारि ।
जब हम जानी अपने मन में, सन्मुख कोउ लड़ैया नाहिं ।‡1‡
तब हम खांडा धरि सागर में, मानी अमर गुरु की आनि ।
नहिं हथियार छुवें हम रण में, हमरे मित्र सकल सरदार ।‡2‡

विवाह प्रस्ताव के पक्ष में पत्र लिखकर राजा संदेशवाहक को पत्र दे देते हैं । अत्यन्त वैभवपूर्ण ढंग से चन्द्रावलि का विवाह सम्पन्न होता है । ऐसा माना जाता है, कि राजा चन्देल के पास पारस-पथरी थी, जिसके छूते ही लोहा सोना बन जाता था । इस प्रकार उनके पास धन-दौलत की किसी प्रकार की कमी न थी ।

---

‡1‡ तेगा, तलवार ।
‡2‡ बड़ा आल्हखण्ड : पं. महावीरप्रसाद जी, पृ.सं. 224.

विवाह के बाद सावन का मास आता है । सर्वत्र हरियाली का साम्राज्य होता है । एक दिन रानी मल्हना अट्टालिका पर चढ़ी हुई सावन की हरियाली का सुन्दर दृश्य देख रही थी । उसने देखा कि समस्त बालाएँ अपने-अपने पिता के घर आकर सावन के मास का आनंद ले रही हैं । हिंडोला झूल रही हैं, नाना प्रकार के गीत गाकर प्रसन्न हो रही हैं । अब उसे अपनी इकलौती बेटी की याद आती है जो अभी अपनी ससुराल में थी । उसकी विदा करवाकर लाने वाला कोई नहीं था, क्योंकि सभी राजकुमार अभी छोटे थे । भारतीय संस्कृति में यह परंपरा थी, कि विवाहोपरांत लड़की का पिता उसकी ससुराल में न तो जाता था और न हि अन्न-जल ग्रहण करता था । दूसरी बात राज-घरानों में शक्ति प्रदर्शन का अहंकार था । शक्ति का प्रदर्शन करके ही वे कार्य की सिद्धि करना चाहते थे ।

परमर्दिदेव की पटरानी मल्हना अपनी पुत्री को अपने पास न पाकर अत्यन्त दुखी हो गई । उसी समय ऊदल महल में आते हैं और मातृ-तुल्य रानी मल्हना को दुखी देखकर कारण पूंछते हैं । बहुत आग्रह करने पर वह अपने दुख का कारण बताती है, कि सभी लड़कियाँ अपनी-अपनी नैहर में तीज-त्यौहार मनाने के लिए आ गई हैं । तुम्हारी बहिन की अभी चौथी भी नहीं ली गई । ऊदल स्वयं अपनी बहिन को ससुराल से लाने के लिए तैयार हो जाते हैं । ऊदल रानी मल्हना के अत्यन्त प्रिय पुत्र के समान थे, उसने अपने एक स्तन का पान कराके ऊदल को सुदृढ़ बनाया था । अस्तु, ऊदल के लिए भी पुत्र धर्म का पालन करना अनिवार्य था ।

ऊदल राजा परमाल से विदा लेकर, सैन्यबल के साथ बौरीगढ़ की ओर प्रस्थान करते हैं । लोकरीति के अनुसार वे अनेक बहुमूल्य रत्न-वस्त्र और आभूषण आदि भैंट या उपहार के लिए साथ में ले लेते हैं । परमाल ऊदल के क्रोधी एवं जिद्दी स्वभाव से परिचित थे, इसलिए वे उन्हें भलीभाँति समझा देते हैं, कि राजा वीरशाह अपने खास रिश्तेदार हैं, किसी प्रकार के संघर्ष की आवश्यकता नहीं है ।

माहिल, जो महोबा के राजा वासुदेव सिंह का पुत्र था बाद में उसे महोबा से निकाल कर उरई [उ. प्र.] की जागीर प्रदान कर दी गई थी, परमाल का जानी दुश्मन बन गया था । वह हमेशा महोबा और परमाल के पतन का मार्ग खोजता रहता था । यह उसे अच्छा अवसर मिला । वह तुरन्त दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान को सूचना देता है कि- राजा परमाल ने दिल्ली पर आक्रमण करने की योजना बनाई है ।

पहले वे ऊदल को भेज रहे हैं तत्पश्चात वे स्वयं आकर दिल्ली को लूट लेंगे । महाराज पृथ्वीराज माहिल की प्रकृति से अवगत थे, अतः वे उसकी बात का ध्यान नहीं देते हैं । चौहान नरेश के पुत्र सूरजमल ऊदल का समुचित स्वागत-सत्कार करते हैं ।

महाराज पृथ्वीराज चौहान ऊदल को उचित परामर्श देते हैं, कि राजा वीरशाह सर्वथा सम्माननीय हैं, उनका उचित सम्मान करना । रानी अगमा [पृथ्वीराज की पत्नी] ऊदल को उचित आशीर्वाद देकर अपने गंतव्य के लिए विदा करती है । बौरीगढ़ पहुँचकर ऊदल अपने तंबू लगवा देते हैं तथा महलों में अपने आने का समाचार भेजते हैं । बौरीगढ़ में भीषण तैयारियाँ होने लगती हैं । वीरशाह का पुत्र जोरावर सिंह ऊदल को सम्मान सहित महलों में लाता है । ऊदल का यथोचित सम्मान होता है । वे अपने साथ लाए हुए वस्त्र-आभूषण आदि राजा को भेंट करते हैं । ऊदल के सौन्दर्य और नम्रता की बौरीगढ़ में अत्यन्त प्रशंसा होती है ।

माहिल पुनः अपनी कपट-नीति का परिचय देते हैं । वे राजा वीरशाह के दरबार में उपस्थित होकर चुगली करते हैं और कहते हैं कि- राजा परमाल ने आल्हा-ऊदल को महोबा से निकाल दिया है । वे उनसे बदला लेना चाहते हैं, इसलिए चन्द्रावलि की चौथी लेने आए हैं । आपकी पुत्र-वधू की चौथ लेकर वे उसे अपनी दासी बनाएँगे । माहिल की बात सुनकर वीरशाह भ्रमित हो जाते हैं । वे अपने पुत्रों को आदेश देते हैं, कि ऊदल के भोजन में जहर मिला दिया जाए, जिससे वह बिना प्रयास ही मर जाएगा । ऐसा ही होता है । जब ऊदल भोजन करने महलों में आता है, तो वीरशाह के पुत्र उसे वीरवेश में आने से मना करते हैं । वे कहते हैं कि भोजन के समय हथियारों का क्या प्रयोजन है । उनकी बात मानकर ऊदल निहत्था महलों में भोजन हेतु आता है । सभी खाना खाने बैठते हैं । ऊदल के सम्मुख जहर-मिश्रित भोजन का थाल आता है । इस रहस्य को चन्द्रावलि पहले ही जानती थी, अतः वह इशारे से ऊदल को रहस्य से अवगत करा देती है । ऊदल अपने भोजन का थाल वीरशाह के बेटों से बदलते हैं और कहते हैं कि यह मेरी कुलरीति है कि बहनोई की थाली बदली जाए । रहस्य का पर्दाफाश होते देखकर राजकुमार क्रोधित हो जाते हैं और अकेले ऊदल पर टूट पड़ते हैं । निहत्थे ऊदल उनका सामना करते हैं, परन्तु वीरशाह के पुत्र उन्हें बन्दी बनाकर खंदक में डाल देते हैं । यह घटना देखकर चन्द्रावलि बहुत दुखी हो जाती है । रात में वह अपने भाई को बाहर निकालने का प्रयास करती है,

परन्तु ऊदल चोरों की तरह चुपके से बाहर नहीं निकलना चाहते थे। वह अपनी बहिन से निवेदन करते हैं, कि घटना की सूचना महोबा भिजवा दें। रानी चन्द्रावलि पत्र लिखकर तोता के गले में लटका देती है और उसे महोबा संदेश ले जाने का आदेश देती है। रास्ते में तोता नरवरगढ़ के राजकुमार मकरंदसिंह द्वारा पकड़ लिया जाता है। पत्र देखकर वे उसे छोड़ देते हैं। इस प्रकार समाचार पहुँचने में विलम्ब हो जाता है।

अन्त में तोता समाचार लेकर महोबा पहुँचता है। समाचार पाकर राजा चन्देल चिंतित हो जाते हैं। रानी मल्हना संदेशवाहक द्वारा सिरसा से मलखान सिंह को बुलवा लेती हैं। मलखानसिंह ब्रह्मानंद (परमाल-पुत्र) आल्हा, ढेबा (पुरोहित-पुत्र) आदि सेना सहित बौरीगढ़ के लिए प्रस्थान करते हैं। चन्देल-नरेश की आज्ञानुसार लश्कर दिल्ली होकरजाता है वहां से पृथ्वीराज चौहान का पुत्र सूरजमल तथा पृथ्वीराज का मंत्री चौड़ियाराय भी उनके साथ बौरीगढ़ जाता है।

बौरीगढ़ पहुँचकर सेना पड़ाव डाल देती है। सभी वीर जोगी-वेष धारण करके नगर में प्रवेश करते हैं। उस समय छल-बल दोनों प्रकार से युद्ध होते थे। सभी जोगी दरबार में जाते हैं तथा अपनी कला से सभी का मन मोहित कर लेते हैं। महलों में ही उनकी कला का प्रदर्शन होता है, वहीं चन्द्रावलि से उनकी भेंट हो जाती है। वह उन्हें ऊदल की राम कहानी का परिचय कराती है। ऊदल का पता चलने पर सभी वीर अपने तंबुओं में वापस आते हैं और महल तक सुरंग का निर्माण करते हैं, उसी रास्ते से वे ऊदल को बाहर निकाल लेते हैं। इस प्रकार ऊदल कैद से मुक्त हो जाते हैं।

अब महोबा की सेना बौरीगढ़ पर आक्रमण कर देती है। ब्रह्मानंद हरनागर घोड़े पर, ऊदल अपने प्रिय घोड़े बेंदुला पर, मलखान कबूतरी नामक घोड़ी पर, आल्हा [illegible] हाथी पर, ढेबा मनोरथा घोड़े पर, सूरजमल सज्जा घोड़े पर तथा चौड़िया-राय हाथी एकदंता पर सवार होकर रणभेरी बजवा देते हैं। यह घोड़े इन वीरों के अद्भुत घोड़े थे। युद्ध के नगाड़ों की आवाज़ सुनकर वीरशाह के पुत्र जोरावर सिंह व सूरजसिंह सेना सजाकर मैदान में आ जाते हैं। मलखान विपक्षी दल के नायक जोरावर सिंह के सामने उपस्थित होकर उन्हें खरी-खोटी सुनाते हुए कहते हैं कि—

हम यदि आए हैं महुबे से, हमरो नाम वीर मलखान ।
बिदा करावन उदल आए, तुमने कैद लियो करवाय ।
तुमतो हमरे बहनोई हो, क्यों घटि करी हमारे साथ ।
बिदा न करिहो जो बहिनी की, मरिहों राज भंग होय जाय ।
लूट करै हौं मैं बौरी की, हमको जानत सकल जहान ।§1§

इस प्रकार दोनों सेना नायकों में आक्रोश पूर्ण वार्तालाप होता है । दोनों ओर से आक्रमण होने लगते हैं । आल्हा, उदल, मलखान, ब्रह्मा एवं सूरजमल आदि वीरों के सम्मुख जोरावर सिंह व सूरजसिंह आदि को अपने मुँह की खानी पड़ती हैं । उनकी सेनाएँ पीछे हटने लगती हैं तथा दल में भगदड़ मच जाती है । इस प्रकार यादव-वंशी बौरीगढ़ की सेना का मोर्चा हट जाता है । महोबा सेना विजय को प्राप्त होती है ।

राजकुमारों §वीरशाह के पुत्र§ की लड़ाई :-

बौरीगढ़ की पराजित सेना महलों में पहुँचती है । पराजय का समाचार सुनकर वीरशाह लज्जित हो जाते हैं । वे अपने सातों बेटों को बुलाकर, अपना रणकौशल प्रदर्शित करने का निर्देश देते हैं । पिता द्वारा भाव-प्रबोदन के कारण जोरावर सिंह व सूरज सिंह पुनः युद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं । इनका सामना सिरसा-नरेश मलखान की सेना से होता है । दोनों सेनाओं में भीषण संग्राम होता है । दोनों सेनाओं के नायक एक-दूसरे पर अपने अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार करते हैं । अन्त में मलखान आक्रोश में आकर पूरे वेग से शत्रु-सेना पर टूट पड़ते हैं । तब आल्हा उन्हें निर्देश देते हैं कि- मलखान इन्हें जान से नहीं मारना है । वे हमारे बहनोई हैं, उन्हें मारना अनीति होगी । उन्हें केवल बंदी बनाना है । आल्हा की बात मानकर मलखान जोरावर सिंह और सूरज सिंह को बन्दी बना लेते हैं ।

जब वीरशाह को अपने दोनों पुत्रों को बन्दी बनाए जाने का समाचार मिलता है, तो वे अत्यन्त चिंतित हो जाते हैं और अपने पुत्र इन्द्रसेन §चन्द्रावलि का पति§ को बुलाते हैं । इन्द्रसेन अपने पिता की आज्ञा मानकर रणक्षेत्र में युद्ध हेतु प्रस्थान करता है । सर्वप्रथम मलखान से उसका मुकाबला होता है । दोनों में आक्रोशपूर्ण वार्ता होती है, आरोप-प्रत्यारोप होता है । मलखान अपनी बहिन की बिदाई की बात

- -

§1§ बड़ा आल्हखंड : पं. महावीर प्रसाद जी, पृ. सं. 243.

करता है, तो इन्द्रसेन तुरन्त इंकार कर देता है, क्योंकि माहिल द्वारा लगाई गई अग्नि का प्रभाव पहले से ही हो चुका था। आक्रोशपूर्ण वार्ता का एक दृश्य द्रष्टव्य है-

घोड़ा बढ़ायो इंद्रसेन ने, भारी जाय दई ललकार।
कौन सो क्षत्री चढ़ि आयो है, सो समुहें होय देय जवाब।
कौन बांध्यो है भैयन को, कहि के जमे करेजे बार।
घोड़ी बढ़ाई तब मलिखे ने, औ समुहें होकरदयो जवाब।
अदब तुम्हारो हम मानत हैं, तुम बहनोई लगो हमार।
घर-घर बिटियाँ नैहर जावें, सावन मास जानि त्यौहार।।1।
विदा करावन ऊदल आए, सो तुम उन्हें दियो डराय।
बिदा न करिहौ जो बहिनी की, मारौं राज्य भंग होइ जाय।
गर्द कराय देहौं बौरी को, गढ़ में आगी दे हौं लगाय।।2।

इस प्रकार उत्तर-प्रतिउत्तर के बाद दोनों सेनाएँ एक-दूसरे पर आक्रमण कर देती हैं। इन्द्रसेन द्वारा किए गए समस्त प्रहारों को मलखान अपनी युद्ध-कला के द्वारा बचा लेता है, लेकिन मलखान के प्रहारों से इन्द्रसेन का घोड़ा घायल हो जाता है और वह मलखान द्वारा बंदी बना लिया जाता है। अन्त में उसके अन्य भाई- मोहनसिंह, जगमनिसिंह, मोतीसिंह एवं पूरनसिंह आदि अपना-अपना जौहर दिखालाते हैं। मोहन-सिंह ऊदल के सामने उन्नीस पड़ते हैं क्योंकि ऊदल का घोड़ा बेंदुला चमत्कारी था। ऊदल के द्वारा किए गए भाले के प्रहार से मोहन सिंह का घोड़ा घायल हो जाता है और वह जमीन पर गिर जाता है। ऊदल उसे बंदी बना लेते हैं। ढेबा जगमनि के सम्मुख जाकर उन्हें चेतावनी देता है—

खबरदार रहियो घोड़ा पर, तुम्हरो काल रह्यो मड़राय।
खींच सिरोही जगमनि भारी, सो ढेबा ने लीन्ह बचाय।
ढालि की औझड़ ले ढेबा ने, घोड़ा जगमनि दियो गिराय।
तुरत बंधाय लियो जगमनि को, औ लश्कर में दियो पठाय।।3।

इस प्रकार जगमनि ढेबा द्वारा बंदी बना लिए जाते हैं। मोतीसिंह व पूरनसिंह को ऊदल ने बंदी बना लिया। इस प्रकार वीरशाह के सातों बेटे युद्धभूमि में बन्दी बना लिए जाते हैं।

1। खंदक या गहरा अंधा कुआ (पानी रहित)।
2। राजकुमारों की लड़ाई : अमोलसिंह (श्रीकृष्ण प्रकाशन, कानपुर) - पृ. सं. 55-56.
3। -वही- : पृ. सं. 250.

वीरशाह {बौरीगढ़-नरेश} की लड़ाई :-

बौरीगढ़-नरेश वीरशाह को जब पता चलता है कि उसके सातों बेटे- सूरज-सिंह, जोरवर सिंह, इन्द्रसेन, मोहनसिंह, जगमनि, मोतीसिंह तथा पूरनसिंह रणक्षेत्र में बंदी बना लिए गए हैं, तो वह अत्यन्त क्रोधित हो जाते हैं और स्वयं युद्ध के लिए तैयारी कर देते हैं । संपूर्ण साज-सज्जा एवं वैभव के साथ बौरीगढ़ की सेनाएँ तैयार हो जाती है । कुछ ही समय में वीरशाह की सेना रणभूमि में उपस्थित हो जाती है ।

रणक्षेत्र में पहुँचकर वीरशाह क्रुद्ध होकर ललकारते हैं कि- कौन-सा ऐसा वीर है जिसने हमारे सातों पुत्रों को बंदी बना लिया है ? राजा की बात सुनकर मलखान उनके सामने उपस्थित होकर कहते हैं कि--

करि प्रणाम हंसि के मलखे, बोले सुनहुँ यादवाराय ।
अदब तुम्हारो हम मानत हैं, नाहक रार करत महाराज ।
बिदा करावन उदल आए, तुम खंदक में दियो डराय ।
नहीं मुनासिब है तुमकों यह, जो घटि करी हमारे साथ ।
अबहूँ तुम्हरो कछु बिगरो न, बहिनि की बिदा देव करवाय ।{1}

मलखान की गर्वीली वाणी सुनकर वीरशाह और भी क्रोधित हो जाते हैं । इसी समय चौंड़ियाराय आगे बढ़कर दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान का संदेश सुनाता है । यथा--

आगे बढ़ि के तब चौड़ा ने, वीरशाह से कही सुनाय ।
यह कहि दीन्हीं पृथ्वीराज ने, तुरतहिं बिदा देउ करवाय ।
कही हमारी जो न मनिहो, तो सब जैहै काम नसाय ।{2}

पृथ्वीराज चौहान की चुनौती पूर्ण सूचना सुनकर वीरशाह ज्वाला-वर्ण हो जाते हैं और उत्तर देते हैं कि--

इतनी सुनि के राजा बोले, ब्राह्मण सुनो हमारी बात ।
बिदा न करि हैं हम आल्हा संग, चाहे लाखन करो उपाय ।{3}

इस प्रकार दोनों ओर से वाद-विवाद हो जाता है और भीषण संग्राम प्रारम्भ हो

{1} -वही- : पृ.सं. 250.
{2} बड़ा आल्हखण्ड : पं. महावीर प्रसाद जी, पृ.सं. 260.
{3} -वही- : पृ.सं. 262.

जाता है । पहले तोपों की लड़ाई होती है । जिस क्षत्री या वाहन {हाथी, घोड़े, ऊँट आदि} के गोला लगता है वह आसमान में पक्षियों के समान उड़ता हुआ नज़र आता है । घोड़ों की चिंघाड़, ऊँटों की बलबलाहट एवं वीरों की हाहाकार से रणक्षेत्र में कोलाहल होने लगता है । मलखान और आल्हा के पराक्रम के आगे वीरशाह की सेना के पैर उखड़ने लगते हैं । उनकी सेनाएँ भागने लगती हैं ।

रण का ऐसा दृश्य देखकर वीरशाह को आत्म-ग्लानि होती है । वह अपना हाथी आगे बढ़ाते हुए, मलखान के सम्मुख पहुँचकर उन्हें कड़े शब्दों में चेतावनी देते हैं । मलखान उनकी चेतावनी का उत्तर देते हैं जिससे उनका आक्रोश और भी बढ़ता है । वह मलखान के ऊपर भाले का प्रहार करते हैं । मलखान उनका प्रहार बचा लेता है और आल्हा से निवेदन करता है कि- वीरशाह सम्माननीय हैं, आप हमारे अग्रज हैं, श्रेष्ठ हैं इसलिए आप ही इनका सामना करें । तब आल्हा अपना हाथी वीरशाह के सम्मुख ले जाते हैं और कहते हैं, कि—

आल्हा बोले वीरशाह से, राजा सुनो हमारी बात ।
कही हमारी राजा मानो, बहिनी की बिदा देव करवाय ।
काम कछू बनिवे को नाहीं, नाहक रार करत महाराज ।
बिदा करैहैं हम बहिनी की, चाहें प्राण रहैं कि जायं ।{1}

वीरशाह उत्तर देते हैं—

यह सुनि बोले वीरशाह तब, तुम सुनि लेव बनाफरराय ।
धोखे रहियो न माड़ौं के, जहं लै लियो बाप को दांव ।
आगे बढ़िहो न महुबे तक, तातें लौटि जाव तत्काल ।
इतनी कहके वीरशाह ने, अपनो भाला दियो चलाय ।{2}

वीरशाह के प्रहार से आल्हा बच जाते हैं और क्रोधित होकर अपने हाथी को आगे बढ़ाते हैं । हाथी वीरशाह के हाथी को टक्कर मारता है जिससे उनके हाथी का हौदा गिर जाता है और वह स्वयं भी जमीन पर गिर पड़ते हैं । आल्हा हाथी से उतरकर उन्हें बंदी बना लेते हैं । बन्दी बनाए जाने पर बौरीगढ़-नरेश लज्जित हो जाते हैं । इसी बीच अन्य योद्धा- मलखान, ढेबा, सूरजमल, ब्रह्मा आदि उनके पास आ जाते हैं ।

{1} -वही- : पृ. सं. 263.
{2} आल्हखंड : खेमराज, श्रीकृष्ण प्रकाशन, कानपुर, पृ. सं. 270, 271.

आल्हा, ब्रह्मा को बौरीगढ़ के किले में आग लगाने का आदेश देते हैं । वीरशाह, ब्रह्मा को देखकर उनका परिचय पूछते हैं । तब आल्हा, ब्रह्मानंद का परिचय देते हुए कहते हैं कि- यह चन्देरी-नरेश परमाल के पुत्र ब्रह्मानंद हैं । रानी मल्हना ने चन्द्रावलि की बिदा कराने लिए इन्हें मेरे साथ भेजा है । पहले ऊदल आए, जिनको आपने कपट-नीति से बन्दी बना लिया ।

आल्हा की बात सुनकर, वीरशाह को माहिल द्वारा की गई चुगली की याद आती है और वे पश्चाताप करने लगते हैं । वे कहते हैं कि- तुम्हारे मामा माहिल ने गंगा की शपथ खाकर कहा था कि आल्हा-ऊदल को परमर्दिदेव ने महोबा से निष्कासित कर दिया है । वे चन्द्रावलि की बिदा करवाकर उसे अपनी दासी बनाकर उनसे बदला लेना चाहते हैं । वीरशाह आल्हा को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि—

लागि हमारी कछु नाहीं है, हम सब त्यारी दई कराय ।
तौलौं माहिल उरई वाले, तिन यह हमतें कही सुनाय ।
गुस्सा होइकैं परमाले ने, आल्हा-ऊदल दिए निकार ।
मन खिसियाने ऊदल आए, तुरतैं लैहैं बिदा कराय ।
बिदा जो करिहौ तुम बहुअर की, तौ सब जैहै काम नशाय ।
बिदा कराय महुबे लैहैं, अपनी दासी लैहैं बनाय ।
गंगा कीन्हीं माहिल ठाकुर, तब हम मानि लियो सचि भाऊ ।
कैद कराई हम ऊदल की, औ संदूक में दियो डराय ।§1§

इस प्रकार वीरशाह अपनी गलती स्वीकार करते हुए पश्चाताप करते हैं । होनहार को प्रबल मानकर वह अपनी पुत्र-वधू को बिदा करने को तैयार हो जाते हैं । आल्हा वीरशाह तथा उनके सातों बेटों का रिहा कर देते हैं । सभी महोबा-वीर बौरीगढ़ में जाते हैं, उनका यथोचित आदर किया जाता है । वे अपने बहनोइयों से गले मिलते हैं । महलों में आनंद मनाया जाता है । उधर चन्द्रावलि की डोली तैयार होती है तथा सभी लौकिक परंपराओं का पालन किया जाता है । महोबा-वीर चन्द्रावलि की डोली लेकर, विजय का पताका फहराते हुए महोबा के लिए वापस प्रस्थान कर देते हैं ।

---

§1§ आल्हखंड : खेमराज, श्रीकृष्ण प्रकाशन, कानपुर, पृ.सं. 270, 271.

राजा परमाल की इकलौती बेटी चन्द्रावलि की डोली जब महोबा पहुँचती है तो राजा सहित समस्त रानियाँ अत्यंत प्रसन्न होती हैं। मल्हना रानी की खुशी का ठिकाना नहीं रहता है। चन्द्रावलि सभी माताओं से प्रेमपूर्वक गले मिलती है। महोबा में घर-घर मंगलाचार होने लगता है, तोपें दागी जाती हैं।

उपरोक्त तीनों लड़ाइयाँ बौरीगढ़ संग्राम के तत्वावधान में हैं। कुछ विद्वानों ने तीनों लड़ाइयों को एक करके बौरीगढ़-संग्राम के नाम से सम्बोधित किया है। कुछ आल्हाकारों ने इसे "चन्द्रावलि की चौथी" नाम दिया है। विवेचनात्मक अध्ययन की दृष्टि से संपूर्ण वर्णन अपेक्षित हो जाता है।

दिल्ली का संग्राम {ब्रह्मानंद-बेला का विवाह} :-

आल्हखण्ड {परमाल रासो} की वर्णनाओं की श्रृंखला में चौदहवाँ संग्राम दिल्ली का संग्राम के नाम से जाना जाता है। यह संग्राम चन्देल-पुत्र ब्रह्मानंद एवं दिल्ली-नरेश पृथ्वीराज चौहान की सुपुत्री बेला के विवाह से सम्बन्धित है। कहा जाता है कि महाभारत के युद्ध में जब वीरों की युद्ध-लालसा की तृप्ति नहीं हुई तो इन्होंने कलयुग में विभिन्न वीरों के रूप में अवतार लिया। ब्रह्मानंद को अर्जुन तथा बेला को द्रौपदी का अवतार माना जाता है। जिस प्रकार द्वापर युग के महाभारत का कारण द्रौपदी को माना जाता है, उसी प्रकार कलयुग में चौहान-चन्देलों के भीषण युद्ध का कारण द्रौपदी रूप बेला को माना जाता है। बेला-विवाह से बेला सती तक समस्त पराक्रमी वीर काल-कवलित हो जाते हैं।

बेला महाराज पृथ्वीराज चौहान की पटरानी अंगमा की रूपवती एवं गुणवती इकलौती पुत्री थी। जब वह विवाह योग्य हो गई तो एक दिन उसकी सहेलियों ने उससे व्यंग्य किया, कि तुम्हारा विवाह अभी तक क्यों संपन्न नहीं हुआ? क्या तुम्हारे पिता निम्नकुल के हैं? अपनी सहेलियों के तीखे व्यंग सुनकर बेला उदास हो जाती है और महलों में आकर बिस्तर पर लेट जाती है। रानी अंगमा जब उससे उदासी का कारण पूँछती हैं तो वह उत्तर देती है। यथा—

बेला बोली तब धीरे से, माता सुनो हमारी बात।
जितनी सखियाँ हमरे संग की, हमसें करें हसौआ आप।

संदर्भित ग्रंथ : बड़ा आल्हखण्ड, पं. महावीर प्रसाद कृत, मथुरा प्रकाशन।

क्या कुल हीने बाप तुम्हारे, जो तुम्हरो नहिं करो ब्याह ।
इतनी बात सुनी रानी ने, बेटिहिं कंठ लियो लिपटाय ।§1§

अपनी पुत्री की बात सुनकर रानी महाराज को महलों में आमंत्रित करती है तथा अपनी पुत्री के मनोभावों को व्यक्त करती है । राजा अपनी प्रियरानी की बात से सहमत हो जाते हैं । प्रातः काल दरबार में जाकर अपने महामंत्री चौड़ियाराय से विचार-विमर्श करते हैं । विचार-विमर्श के उपरान्त वह अपने बड़े बेटा ताहर सिंह को बुलाकर ब्याला का टीका चढ़ाने का आदेश देते हैं । वे ताहर को एक पत्र भी देते हैं जिसमें विवाह की शर्तें लिखी हुई थी । नाना प्रकार के बहुमूल्य रत्न हीरे-मोती आदि तिलक के सामान के रूप में ताहर को देते हुए कहते हैं कि- बेटा, महोबा के अतिरिक्त किसी कुलीन राज-परिवार में अपनी बहिन का टीका चढ़ा देना । महाराज चौहान का एक विचार था कि, महोबा-नरेश परमाल ने बनाफरों को अपना लिया है, जिनकी ओछी §निम्न§ राजपूत-जाति मानी जाती है । इसलिए वे हमारे समकक्षी नहीं हैं । रिश्ता कम से कम बराबर वालों के साथ होना चाहिए । उनका महामंत्री चौड़ियाराय भी ताहरसिंह के साथ तैयार होता है । चौहान-नरेश पत्र में लिखते हैं कि—

कागज लैके कलपी वालो, अपनो कलमदान लै हाथ ।
सिद्धि श्री नारायण लिखि के, ता पाछे ते लिखी जोहार ।
चारों नेगी ताहर बेटा, चौड़ा ब्राह्मण संग लिवाय ।
सब सामग्री तीन लाख की, सो टीका में दियो पठाय ।
प्रथम लड़ाई है द्वारे की, मंडप कठिन चले तलवार ।
करन कलेवा लरिका जैहैं, तब हम लैहैं शीश कटाय ।
जो मंजूर होय याको यह, सो टीका को लेय चढ़ाय ।
यह विधि पाती पृथ्वीराज ने, लिखि के बन्द दियो करवाय ।
चिट्ठी सौंपि दियो ताहर को, औ यह हुकुम दिया फरमाय ।
धर्म नीति यह जगजाहिर है, कीजै ब्याह बराबर माहिं ।
सब पै टीका तुम लै जैयो, एक न जै हो नगर मोहाब ।
जाति बनाफर की ओछी है, सो तहं बसत रजा परमाल ।§2§

§1§ बड़ा आल्हखण्ड, पं. महावीर प्रसाद, पृ.सं. 257.
§2§ -वही- : पृ.सं. 261.

पत्री लेकर ताहर बेटा, जो कि कर्ण का अवतार माना जाता है, अपने महामंत्री चौड़ियाराय के साथ अपनी बहिन के लिए वर की खोज में निकल पड़ता है । सर्वप्रथम वह झुन्नागढ़ के राजा गजराजा के दरबार में जाता है । वे पत्र पढ़कर टीका चढ़ाने से इंकार कर देते हैं । तत्पश्चात् नरवरगढ़ के राजा नरपति सिंह व बूँदी-नरेश गंगाधर आदि के दरबार में जाता है । विवाह की भीषण शर्तों को पढ़कर सभी राजा टीका चढ़ाने से इन्कार कर देते हैं । वे व्यर्थ का खून-खराबा नहीं चाहते हैं । वे अनेक राजाओं के दरबार में गए और टीका चढ़ाने का प्रस्ताव किया, परन्तु निराशा ही हाथ लगी ।

ताहर निराश होकर उरई की ओर प्रस्थान करते हैं । उरई में ताहर सिंह के मामा महीपति राय ‡माहिल‡ राज्य करते थे जो परिहार-वंशी थे । वे उनसे परामर्श करते हैं । माहिल उन्हें सलाह देते हैं कि- कन्नौज में राठौर-वंशी राजा अजयपाल राज्य करते हैं जो कुलीन तथा वीर हैं । अजयपाल के पुत्र रतीभान हैं तथा उनके सुपुत्र लाखन सिंह है । लड़का लाखन सिंह रूपवान तथा गुणवान है । तुम वहां जाकर अपनी बहिन का टीका चढ़ा दो । अपने मामा के निर्देशन के अनुसार ताहर कनवज जाते हैं, परन्तु दुर्भाग्य से वहां भी निराशा ही हाथ लगती है क्योंकि कोई भी क्षत्री व्यर्थ के खून-खराबे में पक्ष में नहीं था ।

अपने महामंत्री चौड़ियाराय के साथ ताहर सिंह उरई की ओर वापस आ रहे थे, कि रास्ते में सिरसा-नरेश मलखान से भेंट हो जाती है । मलखान ताहर से निराशा का कारण पूंछते हैं । बहुत आग्रह करने के बाद वह मलखान को संपूर्ण कहानी सुनाते हैं । ताहर सिंह की समस्या से अवगत होकर मलखान उन्हें महोबा-नरेश राजा परमाल के पुत्र ब्रह्मानंद को टीका चढ़ाने की सलाह देते हैं । ताहर को अपने पिता के निर्देश का स्मरण हो आता है और कहते हैं कि- महाराज ने महोबा-दरबार में टीका चढ़ाने से मना किया है क्योंकि बनाफर निम्न कोटि के क्षत्री हैं । विवाह-सम्बन्ध हमेशा समकक्षियों के साथ स्थापित किया जाता है । ताहर की अहंकार पूर्ण बात सुनकर मलखान क्रुद्ध हो जाते हैं और कहते हैं, कि—

बोले मलखे तब ताहर से, मुख तें बोलो बचन सम्हारि ।
क्या कम बखती लगी तुम्हारी, जो तुम हीनी कही बनाय ।
आल्हा ब्याहे नैनागढ़ में, नेपाली घर भयो विवाह ।

हमरी ब्याह भयो पथरीगढ़, जानत हमहिं वीर चौहान ।
पारस जीति लियो दंगल में, अपनो सिरसा लियो छुड़ाय ।
मामा हमरे माहिल राजा, जो है उरई के परिहार ।
कौन बात में हम ओछे हैं, सो तुम हमहिं देव बतराय ।।§1§

इस प्रकार बनफरों की यश को ओजस्वी वाणी में सुनकर ताहर महोबा में चन्देल-नरेश के पुत्र को टीका चढ़ाने के लिए तैयार हो जाते हैं । इसके अतिरिक्त उनके पास और कोई रास्ता भी न था । मलखान, ताहर तथा चौंड़ियाराय के लिए सिरसा में विश्राम करने की व्यवस्था करके स्वयं महोबा के लिए प्रस्थान कर देते हैं ।

महोबा पहुँचकर मलखान राजा परमाल को सारा वृतांत सुनाते हैं । पहले तो राजा तथा रानी मल्हना विवाह की शर्तों को सुनकर टीका चढ़वाने से इंकार कर देते हैं, परन्तु मलखान के आग्रह पर वे राजी हो जाते हैं । राजा चन्देल यह जानते थे कि मलखान हठीले स्वाभाव का है, इसलिए उन्हें विवाह-प्रस्ताव के लिए संस्तुति प्रदान करना ही थी । आल्हा-ऊदल टीका का प्रस्ताव सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं क्योंकि वे तो हमेशा युद्ध का वातावरण चाहते ही थे ।

मलखान तुरन्त संदेशवाहक द्वारा ताहर तथा चौंड़ियाराय को सिरसा से महोबा बुला लेते हैं । महोबा नगर सजाया जाता है । पारस-पथरी के प्रभाव से सम्पूर्ण नगर वैभव-संपन्न हो जाता है । राजा परमर्दिदेव के महलों में टीका की सभी तैयारियाँ सम्पन्न हो जाती हैं । सभी औपचारिकताओं के साथ ब्रह्मानंद का टीका चढ़ाया जाता है । ऊदल प्रखर बुद्धि का योद्धा तो था ही, अस्तु, वह ताहरसिंह की शक्ति-परीक्षा लेने के लिए उनके समक्ष मोटे लोहे के सात तवे रखवा देता है । ताहर समझ जाता है । वह भाला उठाकर उन तवों पर ऐसा चलाता है कि भाला तवों को पार करता हुआ जमीन में धुस जाता है । अब ताहर महोबा-वीरों की परीक्षा लेना चाहता है । वह घोषणा करता है, कि- जब कोई वीर इस भाले को उखाड़ देगा, तभी टीका की रीति पूरी मानी जाएगी । ऊदल खड़े हो जाते हैं और कहते हैं कि- मैं ब्रह्मानंद का छोटा भाई हूँ, इसे तो मैं ही उखाड़ लूँगा । ऊदल जमीन में धुसा हुआ भाला उखाड़ लेता है ।

---

§1§ -वही- : पृ.सं. 263.

टीका की रस्म पूरी होती है । महलों में मंगलाचार होता है । ब्राह्मणों को दान दिया जाता है । जब ताहर ब्रह्मा को पान का बीड़ा खिलाते हैं तो अपशकुन होता है । मल्हना यह अपशकुन देखकर विचलित हो जाती है, परन्तु मलखान और उदल इसे अन्धविश्वास बताकर उसकी शंका का समाधान करते हैं । टीका चढ़ाने के बाद ताहर और चौड़ा वापस दिल्ली के लिए प्रस्थान करते हैं । जब महाराज पृथ्वीराज को पता चलता है, तो वे इसका विरोध करते हैं । उसी समय माहिल राजा भी उपस्थित हो जाते हैं, वे भी इस रिश्ते को अनुचित ठहराते हैं । चूंकि विवाह की तिथि निश्चित हो चुकी थी तथा पृथ्वीराज की सभी शर्तें राजा परमाल द्वारा स्वीकार कर ली गईं थीं, इसलिए रिश्ता-विच्छेदन का कोई रास्ता शेष नहीं रह गया था ।

इधर महोबा में बारात की तैयारियाँ होने लगती हैं । बड़े-बड़े राजाओं को आमंत्रित किया जाता है । सभी राजा अपने-अपने सैन्यबल के साथ नियत समय पर महोबा में आने लगते हैं । अब माहिल कपट-नीति सोचते हैं, क्योंकि वे हमेशा चन्देल वंश के विनाश का मार्ग सोचते रहते थे । इसका कारण पहले अध्यायों में बताया जा चुका है । वह तुरन्त महोबा पहुँचते हैं । महोबा पहुँचकर परमर्दिदेव से कहते हैं कि- "महाराज पृथ्वीराज का यह प्रस्ताव है कि विवाह के लिए मात्र राजकुमार ही आएगा । बारात की कोई आवश्यकता नहीं है, इसलिए मैं ब्रह्मानंद को अकेले ही दिल्ली ले जाऊँगा तथा विवाह करके वर-वधू को वापस यहां पहुँचा दूँगा । महाराज पृथ्वीराज युद्ध नहीं करना चाहते हैं । वे व्यर्थ के खून-खराबे के पक्ष में नहीं है ।" रानी मल्हना अपने भाई की बात सुनकर प्रसन्न हो जाती है । वह स्वयं भी युद्ध के पक्ष में नहीं थी । अस्तु, वह माहिल की बात पर विश्वास करके ब्रह्मानंद को अकेले ही माहिल के साथ भेज देती है । माहिल कूट नीति या प्रपंच में सफल हो जाते हैं और ठन्डी साँस लेते हुए ब्रह्मा की पालकी लेकर दिल्ली की ओर प्रस्थान कर देते हैं । वास्तविकता यह थी, कि महाराज पृथ्वीराज इस रिश्ते से प्रसन्न नहीं थे और वह छल से ब्रह्मा का वध कर देना चाहते थे, उनकी इस नीति को कार्यरूप में परिणित करने में सहायक थे माहिल ।

जब उदल को यह मालूम होता है कि माहिल मामा अकेले ब्रह्मा को लेकर दिल्ली गए हैं, तो वह बहुत चिंतित हो जाता है । वह माहिल के कपट-व्यवहार से

पूर्णतः परिचित था, क्योंकि माहिल का मुख्य उद्देश्य रहता था चन्देल-वंश को नष्ट करना । ऊदल रानी मल्हना को धिक्कारते हैं और दशपुरा [आल्हा की राजधानी] जाकर अपनी भाभी सोनवां [आल्हा की पत्नी] से सारा समाचार कह सुनाते हैं । वह तुरन्त ऊदल को सलाह देते हुए आदेश देती है कि ब्रह्मा को भयंकर खतरा है, उनकी हर कीमत पर रक्षा की जाना चाहिए । वह ऊदल को यह भी चेतावनी देती है कि मल्हना रानी तुम्हारी धर्म की माता है, उन्होंने अपने स्तन का पान कराके तुम्हें पुत्रवत पाला है ।

अन्त में ऊदल, सिरसा खबर भेज देते हैं । सिरसा-नरेश मलखान के भाई सुलखान मार्ग में ही माहिल को रोक लेते हैं । इस प्रकार माहिल की योजना विफल हो जाती है । ब्रह्मा को सिरसा लाया जाता है तथा माहिल को पकड़कर सिरसागढ़ के मुख्य द्वार पर लटका दिया जाता है । इधर समाचार पाते ही बारात महोबा से सिरसागढ़ होते हुए दिल्ली के लिए प्रस्थान करती है ।

राजा परमाल की विशाल सेना अपने राजसी वैभव के साथ दिल्ली पहुँचती है और नगर से पहले ही पड़ाव डाल देती है । महोबा की बारात में देश-देश के पराक्रमी राजा एवं आल्हा, ऊदल, मलखान, सुलखान, ढेबा आदि महान योद्धा थे । संदेशवाहक द्वारा बारात आगमन की सूचना भेजने का प्रस्ताव होता है । इसके लिए चतुर महोबिया संदेशवाहक रूपन को भेजना तय होता है । पहले तो वह संदेश ले जाने से इंकार करता है क्योंकि दिल्ली-दरबार में संदेश ले जाने का तात्पर्य था युद्ध, परन्तु बाद में ऊदल द्वारा समझाने पर वह बारात की सूचना पृथ्वीराज के पास भेजने के लिए तैयार हो जाता है । वह रैपनवारी लेकर पृथ्वीराज के दरबार में जाता है, जहाँ तोहर के साथ उसका घोर युद्ध होता है । रूपनवारी खून से लथपथ परन्तु विजय प्राप्त करके वापस सेना में आता है । आल्हा-ऊदल उसकी बहादुरी की प्रशंसा करते हैं ।

ब्रह्मानंद के मामा माहिल, जिन्हें सिरसा गढ़ के मुख्य द्वार पर उनकी कपट नीति के कारण लटका दिया गया था, उन्हें भी बारात में बुलाया जाता है । उन्हें पृथ्वीराज के दरबार में विवाह सम्पन्न कराने की सूचनार्थ भेजा जाता है । माहिल तो कपटनीति का संकल्प ही ले चुके थे । वह महाराज पृथ्वीराज के दरबार में जाते हैं । चौहान नरेश उनका स्वागत करते हैं । वे माहिल से परामर्श करते हैं और

कहते हैं कि- महोबा-सेना को किस प्रकार परास्त किया जा सकता है ? महाराज पृथ्वीराज तो इस विवाह के पक्ष में थे ही नहीं, इसलिए वह कोई रास्ता जानना चाहते थे, जिससे महोबा-सेना को परास्त किया जा सके । माहिल सलाह देते हैं कि- बारात को ज़हर मिला शर्बत भेजा जाए, जिसे पीते ही परमाल की सेना मृत्यु को प्राप्त हो जाएगी और बिना प्रयास ही सारा काम बन जाएगा ।

माहिल की प्रदत्त युक्ति के अनुसार दिल्ली-नरेश बारातियों को ज़हर मिला शरबत भेजते हैं । जैसे ही आल्हा शरबत पीना चाहते हैं तो अपशकुन होता है । भविष्य के बारे में जानकारी रखने वाले वीर ढेबा से अपशकुन के बारे में पूछा जाता है, तो वह शर्बत पर शंका करते हैं । कुत्ते को शर्बत पिलाकर परीक्षण किया जाता है । कुत्ता मर जाता है । अब आल्हा को पृथ्वीराज की कपट-भावना का पता चल जाता है । सारा शर्बत फैला दिया जाता है । शर्बत पिलाने आए हुए दिल्ली के सैनिकों को बन्दी बना लिया जाता है तथा पृथ्वीराज का पुत्र सूरजमल भाग जाता है ।

जब माहिल व पृथ्वीराज चौहान को यह मालूम होता है कि उनकी कपट-नीति असफल हो गई है तो माहिल दूसरी योजना बनाता है । वह दिल्ली-पति को परामर्श देता है कि- अब कोई चारा नहीं है, परन्तु आप अपने दरवाजे पर दो लम्बे बाँस गाड़ दीजिए तथा उनके ऊपर सोने के कलश रखवा दीजिए । दो पागल हाथियों को भी छोड़ दीजिए । जब बारात दरवाजे पर आए, तो आप बाँस पर रखे कलश उतारने को कहिए । यह बड़ा दुस्तर कार्य है, लेकिन आप इसे अपनी वंश परंपरा बताकर अनिवार्य बताना । आप यह भी कहिए कि जब इन हाथियों को पराजित करके कलश उतारे जाएंगे, तभी ब्याला का विवाह हो सकता है । ऐसा ही होता है । जब बारात पृथ्वीराज के दरवाजे पर पहुँचती है, तो वह यही प्रस्ताव करते हैं ।

मलखान और ऊदल पृथ्वीराज की चुनौती स्वीकार करते हैं, दोनों वीर पागल हाथियों से टक्कर लेते हैं । कुछ समय के युद्ध के बाद मलखे और ऊदल जौरा-भौरा नामक दोनों हाथियों को पछाड़ देते हैं । ऊदल दांव-पेंच तथा युद्ध कला में निपुण तो था ही, वह बाँस पर रखे हुए कलश उतार लेता है । वे मलखान और ऊदल की अद्भुत वीरता देखकर दंग रह जाते हैं और उनकी द्वितीय योजना भी विफल हो जाती है ।

दिल्ली के दरवाजे की लड़ाई :-

अपनी कपट-नीति में विफल होने के उपरान्त महाराज पृथ्वीराज के सामने युद्ध के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था । महाराज पृथ्वीराज चौहान युद्ध की घोषणा कर देते हैं । दोनों सेनाएं अपना-अपना मोर्चा संभाल लेती हैं । दरवाजे पर जगनेरी-नरेश जगनिक तथा दिल्ली की सेना की ओर से कमलापति का भीषण युद्ध होता है । कमलापति वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं । इस घटना को देखकर महाराज चौहान, जिस्सी नरेश रह्मति तथा सहमति को महोबिया सेना का सामना करने का आदेश देते हैं । परमाल की ओर से मन्नागूजर तथा देबा युद्ध करते हैं । दोनों सेनाएँ एक-दूसरे पर टूट पड़ती हैं तथा भयंकर युद्ध होता है । पृथ्वीराज के सातों बेटा भी समर में उतर पड़ते हैं । भीषण मार-काट होती है । तोपों, भालों, बरछों व तलवारों की करामात का प्रदर्शन मुख्य विषय बन जाता है । ब्रह्मानंद के विवाह में दिल्लीपति के दरवाजे पर हुए युद्ध का एक दृश्य द्रष्टव्य है । यथा:—

हुक्म दै दियो तब ताहर ने, तोपन बत्ती देव लगाय ।
झुके कलासी तब तोपन पर, तुरते आगी दई लगाय ।
चहुँदिशि गोला छूटन लागे, गोली सन्न-सन्न-सन्नाय ।
सातों बेटा पृथ्वीराज के, तिनहूँ खींचि लई तलवारि ।
चारि घरी भर भई लड़ाई, और बहि चली रक्त की धार ।
एक लाख क्षत्री दिल्ली के, महुबे वाले न दियो गिराय ।
छः हजार महोबे के जूझे, ऐसो कठिन भयो संग्राम ।§1§

द्वारे के संग्राम में महोबा-सेना की विजय होती है । मंत्रों के जाप के साथ द्वाराचार-पूजा होती है । अब माहिल निराश हो जाते हैं, वह पुनः कोई कुटिल चाल चलना चाहते हैं । वे चौहान से कहते हैं कि यदि ब्याला की डोली महोबा पहुँच गई, तो चौहान-वंश की मर्यादा धूल में मिल जाएगी । माहिल पुनः एक चाल चलते हैं । वह चौहान-नरेश को एक युक्ति सुझाते है कि पहले समधी मिलन की औपचारिकता की जाए और वहीं परमाल का सिर काट लिया जाए, तो सारी समस्या का समाधान हो जाएगा ।

---

§1§ ब्याला का विवाह : कुवँर अमोलसिंह §श्रीकृष्ण प्रकाशन, कानपुर, उ.प्र.§ पृ. 89.

माहिल द्वारा बताई नीति के अनुसार बारात में समधी मिलन का बुलावा जाता है । परमर्दिदेव चिंतित हो जाते है क्योंकि पग-पग पर माहिल शतरंज की टेढ़ी चालें चल रहा था । युद्ध की संभावना तो थी ही और महाराज परमर्दिदेव अस्त्र-शास्त्र त्याग कर चुके थे तथा युद्ध से सन्यास ले चुके थे । ऐसी स्थिति में समस्या यह थी, कि समधी-मिलन के लिए महोबा-सेना की ओर से कौन जाए ? अन्त में यह निश्चित किया गया, कि आल्हा सभी भाइयों में ज्येष्ठ हैं तथा चन्देल के लिए पुत्र तुल्य हैं । ज्येष्ठ भ्राता पिता तुल्य होता है । अतः उन्हें ही इस लोकरीति का निर्वाह करने के लिए उचित ठहराया गया ।

आल्हा, परमाल की आज्ञा मानकर अपने हाथी पचशावद पर सवार होकर पृथ्वीराज से मिलने जाते हैं । उनकी रक्षार्थ ऊदल और मलखान अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर उनके साथ में जाते हैं । उत्तरभारत की वैवाहिक लोकरीति के अनुसार समधियों का छाती पान लगाया जाता है और दोनों गले मिलते हैं । दोनों वीर एक-दूसरे को अपनी भुजाओं में जोर से जकड़ लेते हैं, परन्तु दोनों बराबरी के योद्धा थे, इसलिए पृथ्वीराज की नीति यहां भी कामयाब नहीं होती है । समधी मिलन के बाद चढ़ावा चढ़ाने की बात सामने आती है । रूपनधारी सुन्दर वस्त्राभूषण, रत्न आदि लेकर मंडप के नीचे उपस्थित होता है । ब्याला को भी मंडप के तले लाया जाता है । चढ़ावा के उपहार और आभूषणों को देखकर वह क्रुद्ध हो जाती है । वह तो द्वापर की रानी द्रौपदी का अवतार मानी जाती है, अस्तु, वह कहने लगती है कि- मुझे तो द्वापर युग के आभूषण, चूड़ियाँ एवं वस्त्र चाहिए । तभी विवाह संभव हो सकता है । यथा—

हाथ जोरि के रूपना ठाड़ो, ब्याला तासों कही सुनाय ।
कलियुग वाले गहना लैकें, ब्याहन आए रजा परमाल ।
तुम यह जाय कहो आल्हा से, द्वापर गहना देउ मंगाय ।
गहना लाओ हस्तिनापुर के, चुरियाँ-चूनरि देउ पठाय ।
तौ तौं ब्याह होय दिल्ली में, नाहिं सब लौटि महोबे जाय ।§1§

जब ऊदल को ब्याला की आभूषणों की मांग का पता चलता है, तो वे आल्हा से निवेदन करते हैं । आल्हा अपना देवी-प्रदत्त खांडा लेकर चंडी का आह्वान करते हैं,

---

§1§ –वही– : पृ.सं. 98 तथा
बृहद् आल्हखण्ड, खेमराज कृत, पृ.सं. 285.

चंडी मन्दिर में प्रकट होती है । वह आल्हा की आराध्या देवी थी । चंडी देवी आल्हा से असमय कष्ट देने का कारण पूछती है । आल्हा अपने गले में कटार लगाते हुए, अपनी बात कहते हैं कि- देवी मुझे ब्याला के विवाह के लिए द्वापर वाले द्रौपदी के वस्त्राभूषण चाहिए । देवी आल्हा की बात सुनकर इन्द्रलोक जाती है । वह अपने भक्त की इच्छा इन्द्र से व्यक्त करती है । इन्द्रदेवता, वासुक देवता [नाग-देवता] को पाताल लोक भेजकर हस्तिनापुर वाली महारानी द्रौपदी के वस्त्र व आभूषण मंगवाते हैं । देवी उन्हें लाकर आल्हा को देती है और आल्हा सभी सामान लेकर लश्कर में आते हैं । वह वस्त्र व आभूषण ब्याला के पास भेजे जाते हैं । ब्याला उन गहनों, चूड़ियों और चूनरी देखकर प्रसन्न हो जाती है । वह स्वयं भी तो चंडी का अवतार थी, अतः रक्तपात ही चाहती थी । माहिल मामा जब इस योजना में भी असफल हो जाते हैं, तो वे पुनः पांसा फेंकते हैं । वे महाराज पृथ्वीराज से कहते हैं, कि- बारात को भावरों हेतु मंडप तले आमंत्रित कीजिए और यह निर्देश दीजिए कि, केवल महोबा खानदान के लोग ही दूल्हा के साथ आयें । इस प्रकार जब वे यहां आयें, तो फाटक बन्द करवा दीजिए और एक साथ हमला करके सब की हत्या कर दीजिए । पृथ्वीराज को यह युक्ति अच्छी लगती है । वे भावरों हेतु दूल्हा को आमंत्रित करते हैं । संदेशवाहक से आल्हा, चौहान के छल-प्रपंच की बात करते हैं तो वह उन्हें पूरा आश्वासन देता है कि अब कोई दुराव नहीं किया जाएगा ।

पृथ्वीराज चौहान के निर्देश के अनुसार ब्रह्मानंद के साथ महोबा खानदान के खास-खास लोग जैसे- आल्हा, ऊदल, मलखान, ढेबा, ताल्हन सैयद, मन्नागूजर, जगनिक आदि जाते हैं । वहां जाकर ब्रह्मानंद के साथ ब्याला का गठबंधन किया जाता है । दोनों चौकियों पर मंडप-तले विराजमान होते हैं, उधर पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार महलों का फाटक बन्द कर दिया जाता है ।

अब अगला संग्राम- मंडप का संग्राम है ।

मंडप की लड़ाई :-

ब्रह्मानंद के विवाह के संदर्भ में अंतिम युद्ध, मंडप का युद्ध है । जब महोबा खानदान के समस्त योद्धा रंग-महल में मंडप के नीचे बैठते हैं तो भावरों की तैयारियाँ होने लगती हैं । शुभ मुहूर्त में ब्राह्मण को बुलाया जाता है तथा लोकरीति के अनुसार विवाह के फेरे लगाए जाते हैं ।

पहले फेरे के प्रारम्भ होते ही पृथ्वीराज का पुत्र सूरजमल ब्रह्मानंद पर प्रहार कर देता है, जिसका जवाब जगनेरी-नरेश जगनिक देते हैं । दूसरे फेरे पर चन्दन बेटा {पृथ्वीराज-पुत्र} आक्रमण करता है जिसे देबा अपनी शक्ति से नाकाम कर देते हैं । इस प्रकार तीसरी, चौथी, पाँचवीं, छटवीं एवं सातवीं भावरों के फेरों पर क्रमशः सर्दन, मर्दन, गोपी, पारथ, एवं ताहर, ब्रह्मा को मारने का प्रयास करते हैं जिसे मन्नागूजर, जोगा, भोगा, ऊदल और मलखान नाकाम कर देते हैं ।

अब दिल्लीपति निराश हो जाते हैं, उनका इशारा पाकर उनका मंत्री चौड़ियाराय, पृथ्वीराज के सातों पुत्रों सहित एक-साथ महोबा-वीरों पर धावा बोल देता है । ऐसा माना जाता है कि चौड़ा ब्राह्मण द्रोणाचार्य का अवतार था और अत्यधिक शक्तिशाली था । मंडप के नीचे ही दोनों दलों में तलवारें टकराने लगती हैं । खून-खराबे के बाद आल्हा-ऊदल एवं मलखान पृथ्वीराज के सातों बेटों को परास्त करके उन्हें बन्दी बना लेते हैं । वीरों का पराक्रम देखकर चौहान-नरेश दंग रह जाते हैं । अब पृथ्वीराज दूल्हा को महलों में कलेवा {लोकरीति} कराने हेतु बुलाते हैं । महोबा के वीर चौहान के प्रपंच से पूर्णतः अवगत हो चुके थे, अतः ब्रह्मा की रक्षार्थ ऊदल भी उनके साथ इस लोकरीति का निर्वाह करने के लिए जाते हैं ।

महलों में जाकर, ब्रह्मा और ऊदल सम्मान पूर्वक ज्योनार के लिए बैठते हैं । स्त्रियाँ मंगलगीत गाती हैं । इसी बीच चौड़ा मौका पाकर स्त्री रूप धारण करता है और महिलाओं के बीच में घुसकर धोखे से ऊदल के पेट में खंजर मार देता है, जिससे वे घायल हो जाते हैं और मूर्छित होकर गिर पड़ते हैं । ब्रह्मा यह घटना देखकर व्याकुल हो जाते हैं । उसी समय रानी अगमा विलाप करने लगती है, क्योंकि वह भी एक माँ थी तथा ऊदल की रिश्ते में मौसी होती थी । वह ब्याला के पास जाकर सारा हाल सुनाती है । ब्याला बहुत व्याकुल हो जाती है और तुरन्त घटना-स्थल पर आकर ऊदल के पेट के घाव में अपनी अंगुली चीर कर रक्त की बूंदे गिराती हैं । इस प्रकार ऊदल को चेतना आती है । वह ब्याला को अपने सम्मुख देखकर, उसके पैरों में गिर जाते हैं, क्योंकि ब्याला उनकी भाभी थी । भारतीय संस्कृति के अनुसार बड़े भाई की पत्नी {भाभी} को माँ के सदृश माना जाता था और उसी के अनुरूप सम्मान दिया जाता था ।

सभी लोग चौड़ियाराय द्वारा किए गए कपट-व्यवहार की भर्त्सना करते हैं ।

कलेवा करने के उपरान्त दोनों वीर लश्कर में वापस आते हैं । घटना की जानकारी पाकर परमाल, मलखान आदि बहुत दुखी होते हैं और इष्टदेवता को बार-बार नमन करते हैं । अब परमाल महलों में बिदाई की सूचना भेजते हैं । चूंकि बेला और ब्रह्मानंद का विवाह पृथ्वीराज चौहान की अनिच्छा से हुआ था, इसलिए वे बहाना बनाते हुए, उत्तर भेजते है कि चौहान वंश की परंपरा के अनुसार एक साल बाद बेला का गौना किया जाएगा और तभी बिदाई की जाएगी । चौहान-नरेश संदेश-वाहक से इन शब्दों में कहते हैं कि--

बोले पृथ्वीराज रूपना से, हमरे कुल का यह ब्यौहार ।
गौना दे हैं साल बीच हम, यह राजा से कहियो जाय ।
हैं सब लायक भूप चंदेले, धनि-धनि वीर बनाफरराय ।
जिन यह ब्याह करौ दिल्ली में, यह सुनि रूपना करी सलाम ।§1§

पृथ्वीराज का संदेश लेकर रूपनवारी लश्कर में आता है । पृथ्वीराज का संदेश सुनकर महाराज चन्देल अपनी सेना को वापस महोबा प्रस्थान करने का आदेश देते हैं । जयघोष के साथ सेना महोबा नगर की ओर कूच करती है ।

जब रानी मल्हना को बारात आने की सूचना मिलती है, तो मल्हना परमाल की समस्त रानियों सहित वह आरती का थाल लेकर दरवाजे पर आती है एवं वीरों की आरती उतारती है । विजय का समाचार पाकर महोबा नगरी में खुशी की लहर दौड़ जाती है । आल्हा-ऊदल और मलखान अपनी माताओं से मिलकर उनका आशीष प्राप्त करते हैं । आगन्तुक राजाओं को यथोचित उपहार देकर, ससम्मान बिदा किया जाता है ।

इस प्रकार ब्रह्मानंद और बेला का विवाह संपन्न होता है । जैसा कि बताया जा चुका है, कि बेला द्रौपदी का अवतार मानी जाती है । खून रक्तपात-प्रिय थी । बिवाह के संग्राम एवं उसमे हुए खून-खराबे से उसे संतोष तो हुआ परन्तु पूर्ण तृप्ति नहीं हुई । अतः दिल्ली और महोबा का संग्राम यहीं समाप्त नहीं हो जाता । बेला का गौना सामान्य गौना नहीं था, उसमें भी भीषण नर-संहार हुआ है । बेला के गौने का संग्राम आल्हखण्ड का अन्तिम संग्राम माना जाता है, जिसमें

---

§1§ बेला का ब्याह : कुँवर अमोलसिंह, प्रकाशन- श्रीकृष्ण पुस्तक प्रकाशन, कानपुर §उ.प्र.§, पृ.सं. 58 तथा बड़ा आल्हखंड : खेमराज कृत, पृ.सं. 291, 292, 293.

संपूर्ण योद्धा काल-कवलित हो गए ।॥1॥

नरवरगढ़ की लड़ाई ॥उदल का विवाह॥ :-

नरवरगढ़ की लड़ाई परमाल रासो में सत्रहवीं लड़ाई के नाम से जानी जाती है, जिसमें दस्सराज-पुत्र उदल के विवाह का वर्णन है ।

एक बार की बात है, राजा माहिल चन्देल-नरेश के दरबार में उपस्थित होते हैं । उनकी महोबा में अच्छी तरह से खातिरदारी की जाती है । माहिल राजा परमाल को उत्तम किस्म के अश्वों की उपयोगिता बताते हुए उन्हें खरीदने का परामर्श देते हैं । युद्धों की संभावना को दृष्टिगत रखते हुए परमाल माहिल का परामर्श स्वीकार कर लेते हैं और उदल को काबुल जाकर उत्तम घोड़े खरीदने का आदेश देते हैं । जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि वीरगाथाकालीन युग में युद्ध कौशल एक प्रशंसनीय कौशल माना जाता था ।

उदल पर्याप्त धनराशि साथ लेकर कुछ सिपाहियों के साथ अश्व खरीदने हेतु काबुल के लिए प्रस्थान करते हैं । महाराज परमाल उदल को समझाते हैं, कि-"उदल तुम उपद्रवी प्रवृत्ति के हो । रास्ते में किसी प्रकार का संघर्ष मत करना ।" उनके साथ पुरोहित पुत्र देवा भी जाता है । मार्ग में नरवरगढ़ नामक राज्य मिलता है, जहाँ नरपति सिंह नाम के राजा राज्य करते थे । नरवरगढ़ की सीमा में उदल विश्राम करने लगते हैं । वे अपने घोड़े को पानी पिलाने के लिए पनघट पर जाते हैं जहाँ नरवरगढ़ की युवतियाँ पानी भर रही थीं । वे उदल के रूप-सौन्दर्य को देखकर मोहित हो जाती हैं और नरवरगढ़ की राजकुमारी फुलवा से उदल के सौन्दर्य की समानता करने लगती हैं । उदल जब फुलवा राजकुमारी के गुणों व रूप का वर्णन युवतियों द्वारा सुनते हैं, तो उनके मन में फुलवा के दर्शन करने की चाह उत्पन्न हो जाती है ।

उदल नरवरगढ़ के एक उद्यान में विश्राम करने लगते हैं, जब उद्यान का माली आता है तो वह उदल को विश्राम करने से मना करता है । उदल माली को कुछ स्वर्ण-मुद्राएँ प्रदान करता है जिससे वह प्रलोभन में फंस जाता है । माली घर जाकर सारा हाल अपनी पत्नी को सुनाता है । स्त्री जन्य स्वाभाव के कारण मालिन और भी प्रलोभन में फँस जाती है और स्वयं उद्यान में आती है । स्वर्ण-मुद्राओं के प्रलोभन के

॥1॥ बड़ा आल्हखण्ड : खेमराज कृत, पृ.सं. 291, 292, 293.

कारण वह भी उदल को उद्यान से चले जाने को कहती है, परन्तु मोहरें पाकर वह भी खुश हो जाती है। कहा जाता है कि माया या धन-दौलत का प्रलोभन मानव को कर्तव्य पथ से विचलित कर देता है। यही स्थिति उद्यान के रक्षक माली व मालिन की थी।

मालिन उदल को अपना परिचय बतलाती है। वास्तविकता यह थी, कि वह मालिन नैनागढ़ की मूल निवासिन थी जहाँ आल्हा का विवाह हुआ था। वह आल्हा की पत्नी सोनवाँ को भलीभाँति जानती थी क्योंकि वह उनकी सहेली थी। सोनवाँ आल्हा की पत्नी तथा उदल की भाभी थी। उदल भी अपना परिचय देते हैं, कि वह आल्हा के लघुभ्राता तथा सोनवाँ के देवर हैं। इस प्रकार दोनों में मित्रता हो जाती है। उस मालिन का नाम हिरिया था। अब उदल राजकुमारी फुलवा को देखने की इच्छा व्यक्त करते हैं। उदल की भावना समझकर हिरिया मालिन उदल को अपने आवास पर ले जाती है। ढेबा उदल को समझाते हैं कि हम जिस उद्देश्य को लेकर बाहर निकले हैं उसे पूरा करना हमारा कर्तव्य है, परन्तु उदल के दिल में तो प्यार का बीज अंकुरित हो चुका था। वह फुलवा को देखे बिना नरवरगढ़ नहीं छोड़ना चाहता था।

हिरिया मालिन अपने घर ले जाकर, उदल का यथोचित सम्मान करती है। वह उदल से कहती है कि—

> बोली हिरिया तब उदल से, सोनवाँ बहिनी लगे हमार।
> एक साथ खेली हम दोनों, आगे पाछे भयो ब्याह।
> सोनवाँ ब्याही नैनागढ़ में, हमरो नरवर भयो विवाह।
> जैसे देवर हो सोनवाँ के, तैसेई देवर लगो हमार।।{1}

उदल हिरिया मालिन की बातें सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं। वह तीन माह तक नरवर-गढ़ में विश्राम करते हैं परन्तु राजकुमारी फुलवा से मिलन नहीं होता है। ढेबा बार-बार उदल को काबुल जाने के लिए प्रेरित करता, परन्तु उदल तो फुलवा के रूप-सौंदर्य का दर्शन करके अपने चक्षुओं की प्यास बुझाना चाहते थे। हिरिया मालिन नरवरगढ़ के महलों की मालिन थी। वह प्रति दिन राजकुमारी फूलमती {फुलवा} को फूलों से

{1} बड़ा आल्हखण्ड : पं. महावीर प्रसाद जी, पृ.सं. 300-301.

तौलती थी तथा उसके लिए हार बनाकर ले जाती थी । एक दिन शकुन-विचारक देबा की प्रेरणा से उदल फूलों का एक विशेष हार तैयार करते हैं, जिसमें बीच-बीच में मोती पिरो देते हैं । वही विशेष प्रकार का हार लेकर प्रातः काल हिरिया मालिन राजकुमारी के पास जाती है । फूलों से राजकुमारी को तौलने के बाद जब वही हार उसे पहनाती है तो उसमें लगे हुए मोती उसको चुभते हैं । हार चूंकि विशेष प्रकार का बना था, इसलिए राजकुमारी हार बनाने वाले का नाम पूंछती है । मालिन यह कह कर बात टाल देती है कि यह हार उसकी बहिन की लड़की ने बनाया है, जो सर्वथा अनजान है परंतु राजकुमारी उससे मिलने की इच्छा प्रकट करती है ।

मालिन घर आकर महलों की संपूर्ण घटना उदल को सुनाती है । उदल दूसरे दिन प्रातः हिरिया मालिन के साथ उसकी लड़की [युवती] का रूप धारण करके, पालकी में बैठकर राजकुमारी फूलमती के महलों में जाते हैं । मालिन महलों में जाकर जनाना वेष धारी उदल का फुलवा से परिचय कराती है कि- यह हमारी बहिन की लड़की है, जो महोबा में रहती है । यह चन्देल-नरेश परमाल की पुत्री चन्द्रवलि की प्रिय मालिन है । हमेशा चन्देल की पुत्री के साथ पलंग पर चौसर खेलती है । अतः फुलवा उसे यथोचित सम्मान देती है । इस प्रकार दोनों में [उदल-फुलवा] मित्रता हो जाती है । वह रात्रि में महलों में विश्राम करने के लिए जनाना वेष-धारी उदल को आमंत्रित करती है । उदल यही चाहते भी थे । अतः वह महलों में विश्राम करते हैं । रात्रि के भोजन के समय उदल की तलवार राजकुमारी देख लेती है और भेद खुल जाता है ।

राजकुमारी फूलमती ने भी उदल की वीरता व सुन्दरता की प्रशंसा सुन रखी थी और उसे मन ही मन वरण कर चुकी थी । अतः दोनों का मिलन हो जाता है । उदल फुलवा से विवाह का वादा करके प्रातः मालिन के घर आ जाते हैं और देबा को सारा हाल बताते हैं । देबा भी राजकुमारी को देखने की इच्छा व्यक्त करता है । अतः देबा और उदल दूसरे दिन योगियों का वेश धारण करके नगर में प्रवेश करते हैं । भ्रमण करते हुए महलों में पहुँचते हैं । वहाँ समस्त रानियाँ जोगियों के मनमोहन रूप को देखकर मुग्ध हो जाती हैं । राजा नरपति सिंह एवं उनकी पटरानी चंपा उन्हें भोजन कराने का आग्रह करते हैं परन्तु वे जोगी अविवाहित कन्या के हाथ का बनाया हुआ भोजन खाना चाहते हैं अतः राजकुमारी फूलमती भोजन तैयार करती

है । अविवाहित युवती के हाथ का बना हुआ भोजन क्षत्रिय धर्म के प्रतिकूल था, अस्तु योगी धर्म-संकट में पड़ जाते हैं और क्षत्रिय धर्म की मर्यादा के लिए वे सामने भोजन देखकर मूर्छित होने का बहाना करते हैं । रानी व राजा व्याकुल हो जाते हैं । राजकुमारी फुलवा का इशारा पाकर दोनों जोगियों की मूर्छा ठीक हो जाती है । दोनों वीर वापस मालिन के आवास पर आते हैं ।

इस अंतराल में उनका सारा धन व्यय हो चुका था, अतः महोबा वापस लौटने के अतिरिक्त कोई उपाय न था । देवा कहता है कि--"अब वापस महोबा चलते हैं, मैं तुम्हारी बीमारी का बहाना करके, राजा परमाल को समझा बुझा दूँगा ।" ऐसी योजना बनाकर दोनों महोबा वापस आने के लिए प्रस्थान कर देते हैं । महोबा में कीरत सागर के पास आकर, पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ऊदल मूर्छित होने का उपक्रम करते हैं । जब राजा परमाल को ऊदल की मूर्छा की सूचना मिलती है, तो वह अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं, आल्हा विलाप करने लगते हैं । रानी मल्हना तथा देवल रूदन करने लगती हैं तब सोनवां उन्हें धैर्य बंधाती है । वह ऊदल को अपने महल में ले जाती है और उनके ऊपर हवा करती है । ऊदल तुरन्त उठ खड़े होते हैं और अपनी भाभी को सारी कहानी सुनाते हैं ।

रानी सोनवां आल्हा के पास जाकर ऊदल की मूर्छा का कारण बताती है और राजकुमारी फुलमती के साथ विवाह कराने का आग्रह करती है । आल्हा स्तब्ध रह जाते हैं । आल्हा राजा नरपतिसिंह व उनके वीर पुत्र मकरंद की वीरता से परिचित थे, उन्हें यह भी पता था, कि नरपतिसिंह के पास शैल शनीचर, काठ का घोड़ा व अजीता बाण हैं । यह सब जादू के उपकरण थे । अतः वे विवाह का प्रस्ताव नामंजूर कर देते हैं । जब रानी सोनवां व्यंग्य-बाणों से उनके पौरूष को धिक्कारती है, तो वे किसी तरह उसके प्रस्ताव को संस्तुति प्रदान करते हैं ।

रानी सोनवां एवं आल्हा के बीच हुई व्यंग-वार्ता का एक दृश्य द्रष्टव्य है- यथा :-

हाथ जोरि के सोनवां बोली, स्वामी सुनो हमारी बात ।
फुलवा बेटी जो नरपति की, सो ऊदल की परी निगाह ।
ब्याह करन को कहि आए हैं, तुमसे करो बहाना आय ।
ब्याह रचाओ तुम भैया को, इतनी मानो कही हमार ।

यह सुनि आल्हा बोलन लागे, हमते यह होइवे को नाहिं ।
फौज कटावे को नरवर में, को नरपति घर करे विवाह ।
इतनी सुनिकै सोनवां बोली, औ आल्हा ते लगी बतान ।
न्यौता भेजो नैनागढ़ मे, तुरतैं आवैं भाई हमार ।
ब्याह कराय लैहौं उदल को, नरवर गर्द देहौं करवाय ।
बोले आल्हा तब सोनवां ते, यह हमरे मन नहीं समाय ।
तब तो सोनवां बोलन लागी, तुम धरि लेउ जनाना भेष ।
चुरियाँ बिछिया स्वामी पहिरो, औ सब छौरि धरो हथियार ।
जाय बिराजो तुम पलका पे, हम उदल को लैहैं ब्याह ।§।§

इस प्रकार रानी सोनवां की व्यंगपूर्ण बात सुनकर, आल्हा लज्जित हो जाते हैं तथा उदल के विवाह की तैयारी करने लगते हैं । वह सभी संबंधी राजाओं और इष्ट मित्रों को निमंत्रण प्रेषित करते हैं । विवाह के शुभ अवसर पर संपूर्ण राजा अपने सैन्यबल के साथ महोबा पहुँचते हैं । वैवाहिक लोक परंपराओं का पालन करते हुए, महोबा की बारात अपने राजसी वैभव के साथ नरवरगढ़ की ओर प्रस्थान करती है ।

नरवरगढ़ पहुँचकर महोबा की सेना अपना पड़ाव डाल देती है । नेगी रूपनवारी बारात की सूचना लेकर राजा नरपति सिंह के दरबार में जाता है, जहाँ सिलहट के राजा विजयसिंह के साथ उसका भीषण युद्ध होता है । कहा जाता है, कि वीरगाथा काल में वैवाहिक परंपरा की हर रस्म पर शक्ति-प्रदर्शन का भाव रहता था । रैपनवारी ले जाना, रैपनवारी ले जाने वाला नेगी भी कन्यापक्षी राजा के दरबार में अपना नेग तलवारों की खटखटाहट के रूप में ही प्राप्त करना चाहता था । युद्ध के माध्यम से अपने जौहर का परिचय देना चाहता था । इस प्रकार महोबा की बारात की ओर से रूपन सर्वप्रथम, युद्ध करके अपनी वीरता से नरपतिसिंह को परिचित कराता है ।

तत्कालीन विवाह आधुनिक युग की भाँति सरल न था । युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद ही विवाह संपन्न होता था । अतः महोबा-सेना का मोहरा मारने के लिए, नरपतिसिंह का पुत्र मकरंद युद्ध के लिए तैयार होता है । रणभूमि में मकरंद का सामना सिरसा-नरेश मलखान से होता है । दोनों वीर अपनी संपूर्ण शक्ति

---

§।§ उदल का ब्याह : कुँवर अमोल सिंह, पृ.सं. 55-56.

119

के एक-दूसरे की सेनाओं का संहार करते हैं, परन्तु मलखान के रण-कौशल के सम्मुख मकरन्द को अपने मुँह की खानी पड़ती है। वह रणक्षेत्र छोड़कर भाग जाता है। महलों में पहुँचकर राजा को युद्ध के समाचार से अवगत कराता है तथा वहाँ से शैलानीचर, बाण अजीता तथा काठ का घोड़ा लाता है। यह सब जादू के उपकरण थे। मकरंद अपने साथ हिरिया मालिन को भी लाता है, वह जादू-विद्या में निपुण थी।

जादू की लड़ाई के कारण महोबा की सेना छिन्न-भिन्न हो जाती है। मलखान की घोड़ी कबूतरी घायल हो जाती है तथा मलखान कैद कर लिए जाते हैं। युद्ध का समाचार पाकर आल्हा पश्चाताप करने लगते हैं। दूल्हा-वेश में ऊदल शत्रु की सेना पर टूट पड़ता है, परन्तु जादू के प्रभाव से उसकी वीरता नाकाम कर दी जाती है और वह भी बन्दी बना लिया जाता है। मकरंद ऊदल के ऊपर भाला का प्रहार करता है, जिसे हिरिया मालिन बीच में ही रोक लेती है। जादू के युद्ध के सामने संपूर्ण सेना क्रियाहीन हो जाती है।

मलखान व ऊदल के बन्दी बनाए जाने के समाचार से आल्हा व्याकुल हो जाते हैं। वे ढेबा को बुलाकर परामर्श करते हैं। ढेबा आल्हा को सलाह देता है, कि महोबा जाकर रानी मल्हना को समाचारों से अवगत कराना चाहिए। यही होता है, ढेबा युद्ध का समाचार लेकर महोबा जाता है और परमर्दिदेव की पटरानी मल्हना को युद्ध के समाचारों से अवगत कराता है। रानी भी चिंतित हो जाती है। आल्हा की पत्नी, रानी सोनवां जादू की विद्या में निपुण थी। अतः रानी मल्हना सोनवां को ढेबा के साथ नरवरगढ़ भेजती है, जिससे वह जादू-युद्ध में महोबा की सेना की मदद कर सके।

रानी सोनवां, नरवरगढ़ प्रस्थान करने से पूर्व अपनी कुल देवी की आराधना करती है। देवी प्रसन्न होकर उसे ऐसी शक्ति प्रदान करती है, जो मूर्छित सेना को चेतन कर सकती थी। नरवरगढ़ पहुँचकर, रानी सोनवां, आल्हा की सेना की मूर्छा हटाती है तथा जादू के प्रभाव से मुक्त करके, ऊदल तथा मलखान को कैद से रिहा करवाती है। सचेत मलखान एवं ऊदल पुनः रणभेरी के साथ अपना मोर्चा जमा लेते हैं। हिरिया मालिन का जादू, सोनवां रानी नाकाम कर देती है तथा मकरंद की सेना के जादू उपकरण क्रियाहीन हो जाते हैं। मलखान, जादूगरनी हिरिया की चोटी पकड़कर काट देता है। इस प्रकार नरवरगढ़ की सेना का मोर्चा हट जाता है और

भगदड़ मच जाती है । मकरंद कैद कर लिए जाते हैं । जब राजा नरपतिसिंह को युद्ध का समाचार मिलता है, तो वे आल्हा की अधीनता स्वीकार करते हैं और कन्या का विवाह करने के लिए संस्तुति प्रदान करते है । आल्हा प्रसन्न होकर, मकरंद को रिहा कर देते हैं ।

अब मुहूर्त के अनुसार फूलमती-ऊदल के विवाह की तैयारियां प्रारम्भ हो जाती है । इसी बीच नारद-स्वाभाव के माहिल नरपतिसिंह के महलों में हाजिर होकर, उसे विवाह करने से विचलित कर देते है । वे कहते है, कि-"बनाफर जाति निम्न कोटि की राजपूत जाति है । यदि आप ऊदल के साथ अपनी कन्या का विवाह कर देंगे, तो राजघराने की गरिमा धूल में मिल जाएगी ।" नरवरगढ़-नरेश माहिल की बात मान कर उनसे विवाह न करने का उपाय पूछते हैं । माहिल कहता है कि- विवाह-मंडप के नीचे अचानक हमला करके महोबा सेना के प्रमुख वीरों की हत्या करदी जाए तो अपमान का बदला भी लिया जा सकता है तथा राज-परिवार की मर्यादा भी बच सकती है ।

माहिल की बात मानकर, राजा नरपतिसिंह यही करते हैं । वे विवाह हेतु आल्हा को महलों में आमंत्रित करते हैं । जब सभी योद्धा महलों में मंडप के नीचे विराजमान होते है, तब वे महल के फाटक बन्द करवा देते हैं । भाँवरों {फेरों} का उपक्रम होता है । वेदमंत्रों का जाप, तथा मंगलगीतों का गायन किया जाता है । इसी बीच अवसर पाकर मकरंद अचानक हमला बोल देता है । अचानक आक्रमण से आल्हा विचलित हो जाते है, परन्तु मलखान आदि वीर उनके आक्रमण को विफल कर देते हैं । मंडप ध्वस्त हो जाता है । मकरंद को पुनः बंदी बना लिया जाता है । भालों-बरछों का मंडप बनाया जाता है तथा भाँवरों का उपक्रम पूरा किया जाता है ।

विवाह संपन्न होता है । शुभ मुहूर्त में राजकुमारी फूलमती की विदाई की जाती है । राजकुमारी बनाफर वंश की कुलवधू बनकर, पालकी में सवार होकर लश्कर में पहुँचती है । महोबा-सेना अपनी विजय-पताका फहराती हुई गंतव्य की ओर वापस प्रस्थान करती है । महोबा में जब यह सूचना मिलती है कि ऊदल की बारात आ रही है तो राजा परमाल के महलों में खुशी की लहर दौड़ जाती है । शहनाइयों की ध्वनि के साथ लोकाचार का निर्वाह किया जाता है । नाना प्रकार के वस्त्राभूषण सेवादारों व नेगियों को भेंट किए जाते हैं । वैवाहिक लोक परंपरा का एक दृश्य दृष्टव्य है ।

यथा--

आई पालकी दरवाजे पर, परछनि करी मल्हनदे रानि ।
बहू उतारी रानी मल्हना, औ महलन में राखी जाय ।
दान-दक्षिणा दे सबही को, घर-घर भयो मंगलाचार ।
ऐसे ब्याह भयो ऊदल को, सो हम लिखि कै दियो सुनाय ।§1§

इस प्रकार उचित आतिथ्य ग्रहण करके आगन्तुक राजागण ससम्मान अपने-अपने राज्यों को प्रस्थान करते हैं । आल्हा, राजा परमाल की सेवा में राज-काज में व्यस्त हो जाते हैं ।

इन्दल-हरण :-

परमाल रासो §आल्हखंड§ में इन्दल-हरण की कथा अट्ठारहवीं कथा-प्रसंग के रूप में वर्णित मानी जाती है । इन्दल, दस्सराज पुत्र आल्हा का इकलौता बेटा था । पवित्र-जलप्रवाहिनी गंगा भारतीय संस्कृति की संरक्षिणी है एवं आर्यों के इतिहास को अपने आप में समेटे हुए है । ऐसा माना जाता है, कि गंगा नदी में अवगाहन करने से मानव पाप-मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त हो जाता है ।

भारतीय संस्कृति की परंपरा में गंगा-अवगाहन के कुछ प्रमुख पर्व हैं, जिनमें दशहरा के पावन पर्व पर गंगा-स्नान विशेष पुण्यदायक माना जाता है । जेठ-दशहरा का गंगा-स्नान पर्व आता है । ऊदल के मन में गंगा-स्नान करने की लालसा जागृत होती है, वह आल्हा से आज्ञा लेकर गंगास्नान के लिए तैयार हो जाते हैं, उनके साथ ब्राह्मण §पुरोहित§ पुत्र देबा भी तैयार हो जाता है । गंगा गमन की सूचना पाकर आल्हाकुमार इन्दल भी अपने चाचा ऊदल के साथ जाने की हठ करता है । आग्रह करने पर आल्हा उसे ऊदल के साथ जाने की आज्ञा प्रदान करते हैं ।

ऊदल अपने लश्कर के साथ बिठूर §उ.प्र.§ में गंगा-नहाने के लिए प्रस्थान करता है । बिठूर पहुंचकर, महोबा-सेना के तंबू लग जाते हैं । वहाँ देश-देश के राजा आए हुए थे, जिनमें कन्नौज-नरेश रतीभान के पुत्र लाखनराना अपने सैन्यबल के साथ उपस्थित थे । ऊदल की सेना में नगाड़ा बजने लगता है । महोबा की सेना का घोष सुनकर लाखन आश्चर्य-चकित हो जाते हैं, क्योंकि बिठूर कन्नौज राज की सीमा के

---

§1§ बड़ा आल्हखंड : पंडित महावीर प्रसाद जी, पृ.सं. 532
एवं ऊदल का ब्याह : कुँवर अमोलसिंह, पृ. 79.

अन्तर्गत था, उसकी राज्य सीमा के अन्दर यदि कोई अन्य राजा युद्ध का घोष करें, यह लाखनराना के लिए अपमान की बात थी । अतः लाखन, उदल की सेना के नगाड़े को बन्द करने का आदेश देते हैं । चूंकि उदल संघर्ष-प्रेमी था ही, इसलिए वह लाखन के आदेश को नकार देता है ।

देबा लाखन के कुल एवं उनकी वीरता से पूर्व परिचित थे, इसलिए वे उदल को समझाते है । तात्छन सैयद लाखन को उदल की वीरता के बारे में बताते है । दोनों योद्धाओं में मित्रता की भावना जागृत होती है । उदल राजानुकूल उपहार लेकर लाखन से मिलने जाते हैं, वहीं दोनों में मित्रता हो जाती है । मित्रता-प्रसंग का एक दृश्य द्रष्टव्य है । यथा—

डंका बाजत रहे उदल को, सुनिके लाखन कही सुनाय ।
हुकम कनौजी को गालिब है, डंका बंद देव करवाय ।
यह सुनि उदल बोलन लागे, डंका बंद होन को नाहिं ।
इतकी सुनि कै दोनों योद्धा, अपने मोर्चा दये लगाय ।
बोले सैयद तब लाखन से, हमरे बचन करो परमान ।
बड़ो लड़ैया उदल ठाकुर, जो देवल को राजकुमार ।
लड़ि न जितिहो तुम उदल से, तासे धीर धरो मनमाहिं ।
मेला देखन तुम आए हो, काहे देहो कटा कराय ।
देबा समझाये उदल को, भैया अबकलि गई तुम्हारि ।
बंद कराय देव डंका तुम, औ चलि मिलो कनोजीराय ।
अजयपाल राजा कनवज में, जिनको उदय अस्त लौं राज ।
बेन चकव्वे को नाती है, जानत जिनहिं सकल संसार ।
होय बड़ाई देश-देश में, जो लाखन सें मिलिहो जाय ।
बात मान लई तब उदलने, पांच दुशाला लिए मंगाय ।
हीरा पांच लिए उदल ने, औ चलि भये लहुरबा भाय ।
पांच कदम जब लाखनि रहिगे, उदल झुकि कै करी सलाम ।
देखो नजराना लाखन ने, लै हंसि कही कनोजीराय ।
तुम सब लायक उदल ठाकुर, राजा दस्सराज के लाल ।
डंका अपनो तुम बजवाओ, यह कहि छाती लियो लगाय ।

भई मित्रता तब दोनों में, शोभा कछू कही न जाय ।{1}

गंगा-मेला में बलखबुखारे के राजा अभिनन्दन की पुत्री चित्तर-रेखा अपनी सहेलियों के साथ आई हुई थी । वह जादू-विद्या में निपुण थी, उसके साथ केसर नामक नटनी {जादूगरिनी} भी थी जो जादू में सिद्धहस्त थी । चित्तररेखा का मुख्य उद्देश्य इन्दल का हरण करना था क्योंकि उसने इन्दल के रूप एवं गुणों की प्रशंसा सुन रखी थी और मन ही मन उसे वरण कर लिया था ।

जब उदल गंगा की मध्यधारा में इन्दल के साथ स्नान करने जाते है तो चित्तररेखा भी वहां अपनी सहेलियों के साथ स्नान के लिए पहुँचती है । वह जादू के प्रभाव से उदल व देबा को भ्रमित कर, इन्दल को तोता बना देती है और पिंजरे में बन्द करके अपने तंबुओं की ओर प्रस्थान कर जाती है । चेतना आने पर जब उदल चारों ओर इन्दल को देखते है, तो उन्हें न पाकर वह विलाप करने लगते हैं । चित्तर-रेखा इन्दल को तोता बनाकर अपने देश बलखबुखारे {बंगाल} की ओर प्रस्थान कर चुकी थी । संपूर्ण मेले में इन्दल का पता लगाया जाता है अन्त में निराश उदल अपनी सेना लेकर चिंतित अवस्था में महोबा के लिए प्रस्थान कर देते हैं ।

माहिल मामा उदल का भाव-प्रबोधन करता है, परन्तु महोबा पहुँचने पर वह आल्हा को मिथ्या संदेश देकर भ्रमित कर देता है । वह कहता है, कि उदल ने इन्दल का सिर काटकर गंगा में विसर्जित कर दिया है । पहले तो आल्हा को माहिल की बात पर विश्वास नहीं होता है परन्तु जब माहिल गंगा जल की शपथ ग्रहण कर लेते हैं तो उन्हें विश्वास हो जाता है । उदल एवं देबा गंगा मेला की घटना जब आल्हा को सुनाते हैं, तो वह नाराज दिखाई देते है क्योंकि माहिल ने पहले ही अपना रंग चढ़ा दिया था ।

आल्हा उदल को धिक्कारते हैं, भला-बुरा कहते हैं । अपने पुत्र की ममता के वशीभूत होकर उदल को हरे बाँस से पीटते हैं । अन्त में जल्लादों को आदेश दे देते हैं कि उदल के नेत्र निकाल कर उनकी हत्या करदी जाय । जल्लाद आल्हा की आज्ञा मानकर, उदल को लेकर जंगल की ओर चल देते हैं । उदल चाहता तो आल्हा के आदेश का प्रतिवाद कर सकता था, परंतु उसने ऐसा नहीं किया क्योंकि बड़े भाई की बात

- -

{1} आल्हखंड : शोध एवं समीक्षा - डॉ० नर्मदाप्रसाद गुप्त, पृ.सं. 152. एवं इन्दल-हरण कथा - कुँवर अमोलसिंह मदौरिया कृत.

का प्रतिकार करना लोकरीति के विरुद्ध था । जब सोनवां व फूलमती को इस घटना का पता चलता है तो वे व्याकुल हो जाती है । वे जल्लादों को धन का प्रलोभन देकर कहतीं हैं कि- तुम हिरन के नेत्र निकाल कर आल्हा के सामने प्रस्तुत कर दो । उदल की हत्या मत करना । आल्हा पुत्र-मोह से ग्रसित हैं, जब उन्हें अपने भाई की याद आएगी तब वे पश्चाताप करेंगे ।

जल्लाद ऐसा ही करते हैं । जंगल में पहुँचकर वे उदल को रिहा कर देते हैं और हिरन का शिकार करके, उसकी आँख निकालकर आल्हा के सामने लाकर प्रस्तुत कर देते हैं । उदल सिरसागढ़ की ओर प्रस्थान कर देते हैं । सिरसा-नरेश मलखान को इस घटना की सूचना पहले से प्राप्त थी अतः वे उदल को दोषी समझकर मुख मोड़ लेते हैं । सिरसा में आश्रय न पाकर उदल नरवरगढ़ की ओर चल देता है ।

इधर जब राजा परमर्दिदेव को मालूम होता है कि आल्हा ने पुत्र-मोह के कारण अपने भाई की हत्या करवा दी है, तो वे क्रोधित होकर दशपुरवा {आल्हा की राजधानी} जाकर आल्हा को प्रताड़ित करते हैं । उदल की शक्ति का बखान करते हुए वह विलाप करने लगते हैं । जब आल्हा का पुत्र-मोह कम होता है तो उन्हें भी अपने सहोदर भाई की याद आती है, वे लज्जित होकर अपनी आँखों पर काली पट्टी बाँध लेते हैं ।

आल्हा की पत्नी सोनवां उदल का समाचार लेने के लिए देबा को भेजती है । देबा जल्लादों से सूचना पाकर सिरसागढ़ पहुँचता है । सिरसागढ़ में उदल से मुलाकात होती है । दोनों वीर नरवरगढ़ पहुँचते हैं । उदल को दुखी देखकर नरवरगढ़-नरेश नरपति सिंह एवं मकरंद दुख का कारण पूंछते हैं । उदल बहाना करता है, कि- "पृथ्वीराज चौहान ने महोबा पर चढ़ाई करके महोबा की लूट करवा ली है, सभी रानियों की डोलियाँ दिल्ली पहुँच गई हैं । मैं असहाय यहाँ आ गया हूँ ।" उदल की बात सुनकर मकरंद आग-बबूला हो जाता है और दिल्ली पर चढ़ाई करने को आतुर हो जाता है । देबा उन्हें ढाढस बंधाते हुए, वास्तविकता से अवगत कराते हैं ।

मकरंद सिंह अपनी माता जी को सारा समाचार कह सुनाता है । भविष्य ज्ञाता देबा योजना बनाता है कि योगी रूप धारण करके इन्दल का पता लगाया जाए । नियोजित कार्यक्रम के अनुसार उदल, देबा, मकरंद एवं उदयाठाकुर आदि वीर योगी

वेशभूषा में इन्दल का पता लगाने के लिए निकल पड़ते हैं। सर्वप्रथम समस्त वीर झुन्नागढ़ जाते है जहाँ मकरंद की ससुराल थी। वहाँ राजा सेनापति राज्य करते थे। मकरंद आदि वीरों को उनकी सास कुशला पहचानने में असमर्थ होती है तब उदल सारा भेद बता देते हैं।

उदल की बात सुनकर, रानी कुशला उन्हें देवी का आह्वान करने की सलाह देती है। यही होता है, उदल झुन्नागढ़ की देवी के मन्दिर में जाकर अलख जगाते हैं। देवी प्रसन्न होकर उदल को इन्दल का पता बतला देती है। ऐसा कहा जाता है कि झुन्नागढ़ जादू विद्या में कुशल क्षेत्र था। अन्त में उदल चारों वीरों के साथ, माता कुशला की आज्ञा एवं आशीर्वाद लेकर बलखबुखारे की ओर प्रस्थान करते हैं। वहाँ भी जादू का बोलबाला था, इसलिए मकरंद की सास सभी योगियों के हाथों में जादू के तावीज बाँध देती है, जिससे कि आकस्मिक जादू का प्रभाव उन पर न पड़े।

बलखबुखारे पहुँचकर सभी योगी नगर में प्रवेश करते हैं, वे अपनी नृत्य-गायन कला से सभी को मोहित कर लेते हैं। अन्त में जोगियों की कला-प्रसिद्धि की सूचना महलों में पहुँचती है। महलों में जोगियों की कला का प्रदर्शन होता है। उदल-देबा एवं मकरंद आदि की नृत्य-गायन कला से चित्तरेखा मुग्ध हो जाती है। वह पान की बीड़ा उदल को देती है। उदल उसके रूप सौन्दर्य को देखकर मूर्छित-से हो जाते हैं। उदल को मूर्छित देखकर चित्तररेखा की माँ जोगियों को चारित्रिक दोष देती है। देबा क्रोधित होकर रानी को प्रताड़ित करता है। चित्तररेखा जोगियों की कला से प्रभावित होकर, उन्हें महलों में भोजन कराना चाहती है इसलिए वह उदल को अपने महल में ले जाती है। वहाँ पिंजरबद्ध तोते के रूप में इन्दल लटक रहे थे। चित्तररेखा मंत्र के द्वारा इन्दल को मानुष बनाकर कहती है कि-"मैंने सोचा था कि दुनियाँ में मात्र तुम ही सर्वसुन्दर हो, परंतु यह युवक तुमसे भी सुन्दर है।"

चित्तररेखा की बात सुनकर इन्दल कहने लगता है कि-"यह तो मेरे चाचा उदयसिंह हैं, तुम परदा करलो।" चित्तररेखा लज्जित हो जाती है। उदल, इन्दल को वापस लेना चाहते हैं परन्तु वह इंकार कर देती है। अन्त में विवाह-प्रस्ताव हेतु गंगा शपथ के साथ वह इन्दल का पिंजरा उदल को समर्पित कर देती है। वह उदल को तोता से मानुष बनाने का मंत्र भी बतला देती है।

तोते-रूप में इन्दल का पिंजरा लेकर, ऊदल देबा आदि के पास आते हैं और सभी योगी महलों से विदा लेकर अपने मुकाम की ओर वापस प्रस्थान कर देते हैं। सभी वीर पहले सिरसागढ़ जाना पसंद करते हैं। ऊदल मंत्र के द्वारा इन्दल-तोते को मानुष बना लेते हैं और सभी सिरसागढ़ पहुँचते हैं। इन्दल को देखकर मलखान बहुत प्रसन्न होते हैं और सभी का यथोचित सम्मान करते हैं। ऊदल उन्हें उत्तर देते हैं कि- "दादा दुर्दिनों में तुमने भी मुख मोड़ लिया था।" मलखान अपने व्यवहार पर लज्जित होते हैं। ऊदल, इन्दल को महोबा [आल्हा के पास] भेजने का प्रस्ताव करते हैं। यही होता है, मलखान एवं देबा इन्दल को लेकर महोबा आते हैं तथा ऊदल, मकरंद एवं कांतामल [मकरंद की पत्नी का भाई] नरबरगढ़ चले आते हैं। ऊदल ने मलखान से रहस्य छिपाने का निवेदन कर ही दिया तथा इन्दल के विवाह-प्रस्ताव का सारा समाचार बता दिया था। ऊदल इन्दल के विवाह में जाने को तैयार नहीं थे क्योंकि आल्हा ने उनका घोर अपमान किया था, परन्तु मलखान द्वारा समझाने पर वह नरवरगढ़ से ही बारात में सम्मिलित हो जाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

मलखान, इन्दल को लेकर महोबा दरबार में पहुँचते हैं तथा राजा परमर्दिदेव को सारा समाचार बतलाते हैं। परमर्दिदेव के साथ मलखान दशपुरवा [आल्हा की राजधानी] पहुँचते हैं। इन्दल महलों में पहुँचकर, सबसे पहले अपनी चाची फूलमती से मिलता है और उन्हें प्रणाम करता है। वह फूलमती को अपने चाचा की कुशलता का सारा समाचार सुनाता है। फूलमती अपने स्वामी की कुशलता का समाचार पाकर प्रसन्न होती है। ऊदल की कुशलता का समाचार पाकर रानी सोनवां आदि खुश हो जातीं हैं।

अब मलखान, अत्यन्त क्रोधित होकर इन्दल को आल्हा के सुपुर्द कर देते हैं क्योंकि उन्होंने पुत्र-मोह के कारण अपने सहोदर भाई ऊदल की हत्या कराने का आदेश दिया था और उसे कठोर सजा दी थी। आल्हा अपने विगत कर्म पर लज्जित होते हैं। मलखान की आक्रोशपूर्ण अभिव्यक्ति का संदर्भ द्रष्टव्य है। यथा—

बोले मलिखे सुनि आल्हा से, दादा देखो नजर पसार।
तुम्हरे समुहें इन्दल ठाड़े, तुम ऊदल को देव मंगाय।
जो न देहो तुम ऊदल को, तौ दशपुरवा देहौं फुकाय।
कायल होइकै सुनि आल्हा ने, अपनी लई कटारी काढ़ि।

हमने उदल को मरवायो, अब मर जाऊँ कटारी मारि ।
छीन कटारी लई मलखे ने, औ आल्हा ते कही सुनाय ।
बलखबुखारे के अभिनंदन, जो नौनिजा के सरदार ।
तिनकी बेटी चित्तररेखा, हरि ले गई परेउना लाल ।
ब्याह करन को हम कहि आए, ताको जल्दी करो उपाय ।
हमहिं दिखावो मर्दूमी तुम, औ इंदल को करो विवाह ।
बिना लहुरवा के देखिहैं हम, कैसे भाँवरि लेत डराय ।§1§

इस प्रकार आक्रोशपूर्ण वार्ता के उपरान्त मलखान सिरसा चले जाते हैं । आल्हा, उदल के अभाव में अत्यन्त चिंतित हो जाते हैं, वे उदल के बल-पौरुष को बार-बार याद करते हैं ।

बलखबुखारे में जादूविद्या की बोलबाला था तथा राजा अभिनंदन का सामना करना भी साधारण बात न थी । रानी सोनवां बार-बार इंदल के विवाह की तैयारियाँ करने के लिए आल्हा से अनुरोध करती, परन्तु आल्हा निरुत्तर हो जाते । रानी को जब यह अनुमान होता है कि आल्हा उसके निवेदन को स्वीकार नहीं करेंगे, तो वह क्रोधित हो जाती है । वह नाना-प्रकार के व्यंग-बाणों से आल्हा को घायल करती है । अन्त में विवश होकर आल्हा इन्दल के विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लेते हैं । आल्हा, परमाल के परामर्श द्वारा सभी गणमान्य राजाओं को इन्दल के विवाह हेतु आमंत्रित करते हैं और विवाह की तैयारियाँ प्रारम्भ हो जाती है ।

अगली कथा इन्दल के विवाह से सम्बन्ध रखती है, जिसमें बलखबुखारे के संग्राम का वर्णन है ।

इन्दल का विवाह §बलखबुखारे की लड़ाई§ :-

इन्दल के विवाह के शुभ मुहूर्त पर आमंत्रित राजागण महोबा में पदार्पण करने लगते हैं । वैवाहिक लोक परंपराओं का निर्वाह किया जाता है । मल्हना, तिलका, सोनवां आदि रानियाँ कुल परंपरा के साथ इन्दल को दूल्हा-रूप में तैयार करतीं हैं । बारात राजसी वैभव एवं अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर बलखबुखारे की ओर प्रस्थान

- -

§1§ महाकवि जगनिक कृत : लोकगाथा काव्य आल्हा - लोकनाथ द्विवेदी, सिलाकारी जी, पृ.सं. 248-49. एवं इन्दल-हरण - कुँवर अमोलसिंह कृत.

करती है । चूंकि मलखान नाराज़गी के कारण महोबा नहीं गए थे, इसलिए यह तय किया जाता है कि इन्दल की बारात सिरसागढ़ होकर जाएगी । बारात सिरसागढ़ पहुँचती है, वहाँ आल्हा के अनुरोध पर मलखान भी अपने सैन्यबल के साथ बारात की शोभा बढ़ाते हैं । नरवरगढ़ से कांतामल §मकरंद की पत्नी का भाई§ मकरंद व उदल भी बारात में सम्मिलित हो जाते हैं ।

महोबा की बारात बलखबुखारे की सीमा पर पहुँचकर अपना पड़ाव डाल देती है । बारात आगमन की सूचना राजा अभिनन्दन के महलों में भेजी जाती है । रूपनवारी द्वारा वैवाहिक लोकरीतियों व परंपराओं की औपचारिकता पूरी की जाती है । जैसाकि बताया जा चुका है कि आदि काल में विवाह करना कोई सामान्य बात नहीं थी, जौहर एवं शक्ति प्रदर्शन के उपरान्त ही विवाह संपन्न होता था । यह शक्ति-प्रदर्शक स्वयंवर अनुकरण था । अतः क्षत्रिय कुल की मर्यादा के अनुरूप राजा अभिनंदन अपने पुत्रों को महोबा की सेना पर आक्रमण करने का आदेश देते हैं ।

बलखबुखारे का राजकुमार आल्हन रणक्षेत्र में उपस्थित हो जाता है । सर्वप्रथम उसका सामना वीर मलखान से होता है । दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध होता है । तोपों के गोले आसमान घूमने लगते हैं, सांगों, तलवारों, भालों और बरछों की खटखटाहट से रणक्षेत्र कोलाहल-पूर्ण हो जाता है । आल्हन एवं मलखान दोनों अपनी-अपनी आन पर डटे हुए थे । अन्त में मलखान की वीरता के समक्ष बलखबुखारे की सेना के पैर उखड़ने लगते हैं, मोर्चा हट जाता है तथा आल्हन युद्ध क्षेत्र से पलायन कर देता है ।

आल्हन सिंह §अभिनंदन का राजकुमार§ के पलायन की सूचना पाकर अभिनंदन क्रोधित हो जाते हैं, वे अपने सातों बेटों को बुलाकर, एक-साथ पूर्ण वेग से आक्रमण कर देते हैं । अभिनंदन सिंह स्वयं हाथी पर सवार होकर मलखान के सम्मुख युद्ध में उपस्थित होते हैं और उन्हें चेतावनी देते हुए कहते हैं कि—

बोले अभिनंदन मलखे ते, काहे धुरी दबायो आय ।
धोखे रहियो न दिल्ली के, नाहीं सजे वीर चौहान ।
करी लड़ाई न पिरथी ने, मन बढ़ि गए बनाफरराय ।
पुष्पे लौटि जाउ महुबे को, नाहक प्राण गंवाए आय ।§1§

---

§1§ बड़ा आल्हखण्ड : पं. सीताराम – पृ.सं. 365.

मलखान भी उनकी चेतावनी का यथोचित उत्तर देते हैं । यथा—

यह सुनि मलखे बोलन लागे, परबी परी दशहरा क्यारि ।
बेटी तुम्हरी गई बिठूर को, गंगा केरि करन अस्नान ।
इन्दल बेटा को हरि लाई, जादू करिके सुआ बनाय ।
ऊदल आए जोगी बनकें, सो इंदल को गए लिवाय ।
गंगा उठवाई बेटी ने, सातों भंवर लेउ डरवाय ।
सो हम आए चढ़ि बारात लै, सातों भाँवर देव डराय ।
बिना ब्याहे हम जैहैं न, चाहैं प्राण रहैं कि जाय ।§1§

मलखान की गर्वीली वाणी सुनकर अभिनंदन आग-बबूला हो जाता है । वह पूर्ण वेग के साथ शत्रु की सेना पर टूट पड़ता है । अभिनंदन एवं उसके सातों बेटों के रण-कौशल के आगे महोबा-सेना अपना साहस छोड़ देती है, उसमें भगदड़ मच जाती है तथा मलखान की घेराबंदी कर ली जाती है । अब मलखान भयभीत होने लगते हैं और ऊदल को युद्ध की सूचना प्रेषित करते हैं ।

युद्ध का समाचार सुनकर ऊदल, देबा, मकरंद एवं कान्तामल तुरन्त सेना लेकर रणभूमि में उपस्थित हो जाते हैं । भीषण ललकार के साथ ऊदल दल में घुस जाता है । वह क्रोधित होकर अभिनंदन के पुत्र हंसामनि पर प्रहार कर देता है, परन्तु मलखान उसे जान से न मारने का आदेश देते हैं । ऊदल उसे बंदी बना लेता है । अब ऊदल आल्हा की ओर मुखातिर होता है । ऊदल के रण-कौशल एवं प्रलयकारी मारकाट को देखकर आल्हा आश्चर्य चकित हो जाते हैं । वह ऊदल को पहचानने में असमर्थ रहते हैं क्योंकि युद्ध में मारधाड़ के अतिरिक्त सोचने का अवसर ही कहाँ होता है । आल्हा अनजान ऊदल का सामना करने के लिए अपने हाथ में लाल कमान धारण कर लेते हैं । ऊदल का रणकौशल एवं आल्हा से वार्तालाप का एक प्रसंग द्रष्टव्य है—

लश्कर मारो अभिनंदन को, औ आल्हा पै पहुँचो जाय ।
ऐड़ लगाई रसबेंदुल§2§के, पचशावद§3§पर वाजी टाय ।
ढाल की ठोकर ऊदल मारी, सोने कलशा दिये गिराय ।

---

§1§ बड़ा आल्हखण्ड : पं. सीताराम – पृ.सं. 366.
§2§ ऊदल के घोड़े का नाम.
§3§ आल्हा के हाथी का नाम.

बोले आल्हा तब मलखे ते, यह क्षत्री है बुरी बलाय ।
तौलौं ऊदल समुहें आये, कर में आल्हा लियो कमान ।
मलिखे बोले तब आल्हा ते, दादा कित गयो ज्ञान तुम्हार ।
ऊदल ठाड़े हैं समुहे पर, तुमने लीनीं हाथ कमान ।
सुनते धरि कमान हौदा में, आल्हा छाती लियो लगाय ।
बिना बेंदुला के चढ़वैया, ऐसी कौन करै तलवारि ।
ऊदल बोले तब आल्हा ते, दादा धन्य तुम्हारो ज्ञान ।
मामा माहिल के कहिबे तें, तुमने मारो हमें बंधाय ।
सौंपि दियो फिर जल्लादन को, दाहिने भईं शारदा माय ।
जोगी बनके हमने ढूंढो, इन्दल महोबे दियो पठाय ।
तासिति बीती अब भौंरिन की, क्यों नहिं ब्याह लियो करवाय ।
याही पौरुष पर दादा तुम, मोहिं जल्लादन दियो गहाय ।
आल्हा बोले तब कायल हुये, झूठी कही माहिल परिहार ।
गंगा उठाय लियो माहिल ने, तब हमरे मन गई समाय ।
जब हम चलिहैं गढ़ पहुवे को, उरई घर-घर लै हैं लुटाय ।§1§

आल्हा के समक्ष अपने उद्गार व्यक्त करके ऊदल, देवा, कांतामल, मकरंद चारों ओर से बलखबुखारे की सेना पर आक्रमण कर देते हैं । मलखान बीच दल में घुसकर भीषण मार-काट मचा देते हैं । ऊदल, मलखान आदि के आक्रमण से अभिनंदन की सेना के पैर उखड़ जाते हैं । उनके सातों बेटा- हंसामनि, मोहन, सुक्खा आदि बंदी बना लिए जाते हैं । अपने पुत्रों की पराजय से आक्रांत होकर अभिनंदन स्वयं युद्ध के लिए तैयार हो जाते हैं ।

<u>अभिनंदन का संग्राम</u> :-

बलखबुखारे के राजा अभिनंदन का संग्राम आल्हखण्ड में बीसवां संग्राम माना जाता है । अपने पुत्रों के बन्दी बनाए जाने पर, वह स्वयं महोबा-सेना का सामना करने के लिए रणभूमि में उपस्थित होता है । राजा अभिनंदन का सामना करने के लिए महोबा-सेना की ओर से ब्राह्मण-पुत्र चौड़ियाराय आता है, वह भी इन्दल के विवाह में बाराती बनकर आया था । दोनों में भयंकर संग्राम होता है । चौड़ियाराय का हाथी घायल हो जाता है और वह युद्ध से पलायन कर देता है । महोबा की सेना के

---

§1§ : वही : 367, 368.

पैर उखड़ने लगते हैं, तब मलखान एवं ऊदल आदि वीरों का हौंसला बुलन्द करते हैं। युद्ध के नियम और मर्यादा के अनुसार मलखान, आल्हा से युद्ध करने का निवेदन करते हैं क्योंकि अभिनंदन आयु व सम्मान में आल्हा का समकक्षी था।

आल्हा अपना हाथी बढ़ाकर अभिनंदन का सामना करते हैं। दोनों वीरों की ओजस्वी वार्ता एवं युद्ध-पराक्रम का एक प्रसंग द्रष्टव्य है--

हाथी बढ़ायो तब आल्हा ने, अभिनंदन से लगे बतान।
या तो ब्याह करो बेटा को, या तुम हाथ लेउ हथियार।
गुस्सा होइकै अभिनंदन ने, अपनी लीन्हीं लाल कमान।
सूड़ि उठाई पचशावद ने, कैबर[1] निकरि गयो वा पार।
हौदा के संग हौदा मिलिगे, हौदा कठिन चले तलवारि।
खोलि जंजीर दियो आल्हा ने, पचशावद को दियो गहाय।
सांकल फेरी तब हाथी ने, सब दल रेन-बेन होइ जाय।
भगे सिपाही अभिनंदन के, अपने डारि-डारि हथियार।
बाँधि जंजीरन अभिनंदन को, आल्हा खुशी भये मनमाँहि।
जबहीं बाँध्यो अभिनंदन को, जीत को डंका दियो बजाय।[2]

इस प्रकार महोबा की सेना की विजय होती है और राजा अभिनंदन आल्हा की अधीनता स्वीकार कर लेते हैं। पंडित चूड़ामणि को बुलाकर विवाह-मुहूर्त के अनुसार भांवरों आदि का उपक्रम होता है। महलों में मंगलाचार होता है। लोकरीतियों के निर्वाह के बाद चित्तररेखा अपनी माता एवं सहेलियों से विदा लेकर डोली में बैठती है। उसकी डोली लश्कर में आती है। अब महोबा की सेना के तंबू उखड़ जाते हैं और वह विजय का घोष करती हुई अपने मुकाम की ओर प्रस्थान कर देती है।

महोबा पहुँचकर महलों में विजय का समाचार मिलता है। रानी मल्हना, सोनवां आदि चित्तररेखा को ससम्मान डोली से उतारकर महलों में ले जाती हैं। महलों में खुशियां मनाई जाती हैं तथा कुलरीति आदि का निर्वाह किया जाता है। आगन्तुक राजाओं को उचित उपहारों से सम्मानित कर, विदा किया जाता है। इस प्रकार कठिन जौहर एवं वीरों की अद्भुत वीरता के बीच इन्दल का विवाह सम्पन्न होता है।

---

[1] नुकीली धार वाला लोहे का शस्त्र. [2] : वही : पृ.सं. 370.

-=:×××:=-